Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِیْٓ اُنْزِلَ فِیْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰی وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْیَصُمْهُ

(सूरः अल् बकरः : 186)

अनुवाद : रमज़ान का महीना जिसमें कुरआन अवतरित हुआ, मानव जाति के लिए एक महान मार्गदर्शन के रूप में और स्पष्ट निशानियों के रूप में जिसमें मार्गदर्शन और बातों का विवरण है जो सही और गलत के बीच अंतर करता है। तो तुम में से जो कोई इस महीने को देखे, वह उपवास रखे।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْكَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِهِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-16

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

28 रमज़ान 1444 हिज्री कमरी, 20 शहादत 1402 हिज्री शम्सी, 20 अप्रैल 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को स्वीकार न किया जाए
यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से प्रस्तुत किया है

"हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं और हे जज़ाइर के रहने वालो कोई बनावटी ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादियों को खंडर पाता हूँ।" (हज़रत-ए-अक़दस महदी माहूद अलैहिस्सलाम)

ऐसे में अगर कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की तालीम के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है
जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है, जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरीयत उतरी, जिसकी तालीम प्यारो मुहब्बत की तालीम है

हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो ज़ाती, ख़ानदानी, नसली, क़ौमी, मुल्की तर्जीहात से बाला हो कर क़ायम करने की कोशिश की जाए एक मर्कज़ी केंद्र कीप प्राप्ति के लिए की जाए और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और उसका फ़हम--ओ-इदराक पैदा कर ले कि
मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है

अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन-ए-करीम जो रोशन किताब और समस्त उलूम-ओ-मआरिफ़ का स्रोत और हिदायत का नूर है और सलामती का पैग़ाम है, को भेज कर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है, अगर इन्सान इससे फ़ायदा न उठाए और अपनी नष्ट करने वाली ख़ुद-गरज़ी मुफ़ादात का ही कैद में रहे तो इस से बड़ी बदक़िस्मती और क्या हो सकती है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी इलम-ओ-मार्फ़त का सही इदराक हो सकता है

आज यह काम मसीह मौऊद की जमाअत के सपुर्द किया गया है, अगर हमने भी घरेलू सतह से ले कर
अंतरराष्ट्रीय सतह तक उसके मुताबिक़ अपना किरदार अदा न किया तो हमारे अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है

हमारे मुख़ालेफ़ीन जो भी चाहें सोचें और करें, हमारा काम है कि अगर हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं

दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन-ओ-सलामती का यही एक हल है, अतः आओ और अमन-ओ-सलामती की तालीम देने वाले इस अज़ीम वजूद से जुड़ कर दुनिया-ओ-आख़िरत में अपनी सलामती के सामान कर लो

अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी भाईचारा पैदा न हो और हक़ीक़ी भाईचारा एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकता

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल होने वाली कामिल शरीयत में वर्णन फ़र्मूदा तालीमात की रोशनी में हक़ीक़ी और स्थाई अमन-ए-आलम के क़ियाम की विषय में वर्णन

अफ़राद-ए-जमाअत को अपना किरदार इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ करते हुए दुनिया के लिए उम्दा उदाहरण क़ायम करने

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

का उपदेश
जलसा सालाना जमाअत अहमदिया जर्मनी 2022 ई. के अंतिम इज्लास से
सय्यदना अमीरुल-मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़
का विशेष ईमान वर्धक खिताब

(फ़र्मूदा तिथि 21 अगस्त 2022 ई. दिन रविवार स्थान एवान-ए-मसरूर, इस्लामाबाद, टलफ़ोरड, यू.के)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

जमाअत अहमदिया जर्मनी को अपना जलसा सालाना आयोजित करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई और पिछले वर्ष की निसबत बड़े इंतेज़ामात के साथ आप यह जलसा आयोजित कर रहे हैं। पहले covid की महामारी ने दुनिया को परेशान किया और अभी वह महामारी की परेशानी ख़त्म नहीं हुई तो अब दुनिया में जंगों की सूरत-ए-हाल ने दुनिया को एक इंतेहाई ख़तरनाक मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया है। दुनिया का कोई ख़ित्ता भी इस मुतवक़्क़े तबाही से महफ़ूज़ नज़र नहीं आता और जब तक वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करेंगे तबाही से बच भी नहीं सकते।

पहले तो यूरोप और पश्चिमी देशों और प्रगति प्राप्त देश इस ज़ोअम में बैठे हुए थे कि जंगों की सूरत-ए-हाल, फ़साद की सूरत-ए-हाल, इलाक़ों और मुल्कों की तबाही के हालात जहां पैदा हुए हुए हैं या हो रहे हैं वे हमसे हज़ारों मील दूर हैं और हम महफ़ूज़ हैं। हालात ख़राब हैं, बम पड़ रहे हैं, लोग मर रहे हैं, औरतें विधवा हो रही हैं, बच्चे यतीम हो रहे हैं, लोग अपाहिज हो रहे हैं तो वह एशिया में और मशरिक़ वुसता में और ग़रीब देश में हो रहे हैं, हमें क्या फ़र्क़ पड़ता है। प्रगति प्राप्त मुल्क इन मुल्कों को असलाह फ़राहम करते रहे कि हमारा असलाह बिकता रहे। ये मरते हैं तो मरें, क्या फ़र्क़ पड़ता है। लेकिन भूल गए कि ये हालात उन पर भी आ सकते हैं और अपनी तरक़्क़ी के ज़ोअम में उनकी अक़्लें मारी गईं और आँखें अंधी हो गईं और फिर अब सब दुनिया देख रही है कि वही हुआ जिसका ख़तरा था और यूरोप में भी जंगी हालात पैदा हो हैं।

यूकरेन की वजह से रूस और नेटो (NATO) के देश आमने सामने खड़े हैं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि बरतरी किस ने आख़िर में हासिल करनी है या दोनों की तरफ़ कितना नुक़्सान होना है लेकिन यह निश्चित बात है कि इस के नतायज बहुत ख़तरनाक होने हैं और अगर अब भी अक़ल से काम न लिया तो एक ख़ौफ़नाक तबाही इसका परिणाम है।

फिर हम देखते हैं कि अब ताइवान का मुआमला भी खड़ा हो गया है और साफ़ ज़ाहिर है कि अब पूरी दुनिया ख़ौफ़नाक जंग के किनारे पर खड़ी है। इस ज़माने के अल्लाह तआला के फ़िरिस्तादे ने बड़े ज़ोर से सचेत किया है है कि "हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी महफ़ूज़ नहीं और हे जज़ाइर के रहने वालो कोई मस्नूई ख़ुदा तुम्हारी मदद नहीं करेगा। मैं शहरों को गिरते देखता हूँ और आबादीयों को वीरान पाता हूँ।"

(हकीकतुल वह्यी, ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 269)

यही वह इरशाद है और तंबीया है और warning है जिसकी वजह से ख़ुलफ़ा-ए अहमदियत समय समय पर तवज्जा दिलाते रहे। मैं भी एक अरसा से इस तरफ़ तवज्जा दिला रहा हूँ, ये बता रहा हूँ कि अपने पैदा करने वाले वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा की तरफ़ रुजू नहीं करोगे तो तबाही निश्चित है।

अरसा से बता रहा हूँ कि बलॉक बन रहे हैं और इस का आख़िरी नतीजा एक दूसरे की तबाही पर मुंतिज होगा, इसलिए होश करो लेकिन अक्सर ये लोग ये बातें सुनते हैं, सुनते थे और अब भी सुनते हैं और कह देते थे कि हालात कुछ ख़राब हैं। ठीक है कि कुछ हद तक ख़राब हैं लेकिन ऐसे भी नहीं जैसे तुम ख़ौफ़नाक और मायूसकुन हालात का नक़्शा खींच रहे हो। मुझे भी लोगों ने कहा, हमारे अपने जमाअत के अफ़राद को भी लोगों ने कहा लेकिन अब यही लोग जो इन बातों को सतही नज़र से देखते थे ख़ुद कहने लग गए हैं कि हालात बद से बदतर होते चले जा रहे हैं और अगर यही हालात रहे तो किसी वक़्त भी ख़ौफ़नाक जंग की सूरत हो सकती है।

अब ये बातें उनके थिंक टैंक (think tank) और तजज़िया निगार आम कहने लग गए हैं लेकिन इसके बावजूद पायदार अमन क़ायम करने का हल उनके पास नहीं है और ये हो भी क्योंकर सकता है कि अमन के स्रोत की तरफ़ उनकी नज़र नहीं है। दुनिया में डूबे हुए हैं और दीन को भूल चुके हैं।

जहां अमन का हल है वहां न ये ग़ैर मुस्लिम हुकूमतें आना चाहती हैं उनकी ही बदक़िस्मती से मुस्लमान हुकूमतें आना चाहती हैं।

अब बाअज़ जगह तजज़िया निगार ये भी कह रहे हैं कि जंगों की सूरत में जो तबाही होनी है वह ऐसी ख़ौफ़नाक होगी कि एक अंदाज़े के मुताबिक़ दौरान-ए--जंग और इस के बाद के दो सालों में ऐटमी हथियारों के प्रयोग की वजह से दुनिया की छयासठ फ़ीसद आबादी सफ़ा हस्ती से मिट जाएगी। ऐसी तबाही--ओ-बर्बादी होगी जिसका तसव्वुर भी कोई नहीं कर सकता। एक आम इन्सान तो इस का सोच भी नहीं सकता। अतः बहुत ख़ौफ़नाक हालात हैं

ऐसे में अगर कोई उम्मीद की किरण है, अमन की ज़मानत है तो एक ही वजूद है जिसको अल्लाह तआला ने अमन-ओ-सलामती की तालीम के साथ दुनिया में भेजा था, जो शहनशाह-ए-अमन है, जो अल्लाह तआला को सब इन्सानों से ज़्यादा प्यारा है,जिस पर अल्लाह तआला की आख़िरी कामिल और मुकम्मल शरीयत उत्तरी, जिसकी तालीम प्यारो मुहब्बत की तालीम है, जिसने अपने ख़ुदा तआला के ताल्लुक़ की वजह से और अपने ऊपर उत्तरी हुई तालीम को दुनिया में फैलाने और दुनिया को तबाही से बचाने की फ़िक्र और इस के लिए शदीद दर्द महसूस करने की वजह से अपनी ज़िंदगी हलकान कर ली थी। इस हद तक अपनी हालत कर ली थी और करब से तड़प कर और रो-रो कर अल्लाह तआला से दुआएं कीं कि अल्लाह तआला आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फ़रमाया कि لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (अल् शोरा : 4) क्या तू अपनी जान को इसलिए हलाक कर देगा कि वह मोमिन नहीं होते

अतः यह है वह ज़ात जो दिल में इन्सानियत के लिए दर्द रखती थी कि लोग अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजू करें और तबाही से बच जाएं। अपनी दुनिया भी बचा लें और अपनी आख़िरत भी बचा लें। ऐसी जामा तालीम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अता फ़रमाई कि कोई और तालीम उस का मुक़ाबला नहीं कर सकती। ऐसी अमन की ज़मानत दी जो दरअसल अल्लाह तआला की दी हुई ज़मानत है लेकिन अफ़सोस कि मुस्लमान भी इस तालीम को भूल गए और ईमान के सिर्फ ज़बानी नारे लगा कर एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हुए हुए हैं और इस के लिए ग़ैरों से मदद के तालिब हैं।

कलमा पढ़ने वालों, कलमा पढ़ने वालों को दीन के मुख़ालेफ़ीन की मदद से क़तल कर रहे हैं। इस से ज़्यादा बदक़िस्मती मुस्लमानों की और क्या हो सकती है? ऐसी ख़ूबसूरत तालीम और ऐसा दर्द रखने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इत्तिबा का दावा करने के बावजूद अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल ले रहे हैं और दुनिया में अमन-ओ-सलामती फैलाने के बजाय बदअमनी फैलाने के हवाले से मशहूर होते चले जा रहे हैं और ये सब इसलिए है कि अल्लाह तआला ने जो इस ज़माने में अमन-ओ-सलामती के बादशाह और अल्लाह तआला के सबसे प्यारे के ग़ुलाम को दुनिया में अमन-ओ-सला-मती की तालीम फैलाने के लिए भेजा है इस की बात भी सुनना नहीं चाहते और न सिर्फ बात सुनना नहीं चाहते बल्कि इस हद तक बढ़ गए हैं कि इस पर और इस के मानने वालों पर कुफ़्र के फ़तवे लगाने वाले और उनको क़तल करने को इस्लाम की ख़िदमत और ख़ातिमु अंबियाँ हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मुहब्बत का मयार समझते हैं। अहमदियों की ज़िंदगियों से खेलना उनके नज़दीक कार-ए-सवाब है। अतः ऐसे लोग किस तरह इस्लाम

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

यह चमत्कार केवल क़ुरआन-ए-शरीफ़ ही का है कि फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है, सच्चाई भी है, हिक्मत भी हैं

जिन बातों पर ईसाई गर्व करते हैं वे समस्त सच्चाईयां मुस्तक़िल तौर पर और निहायत ही अकमल तौर पर क़ुरआन-ए-मजीद में मौजूद हैं

"हदीस क़ाज़ी नहीं बल्कि क़ुरआन इस पर क़ाज़ी है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"क़ुरआन शरीफ़ में जो अहकाम-ए-इलाही नाज़िल हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसको अमली रंग में करके और करा के दिखा दिया और एक उदाहरण क़ायम कर दिया। अगर यह उदाहरण न होता तो इस्लाम समझ में नहीं आ सकता लेकिन असल क़ुरआन है" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"यह क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार है कि इस में सारे शब्द ऐसे मोती की तरह पिरोए गए हैं और अपने-अपने मुक़ाम पर रखे गए हैं कि कोई एक जगह से उठा कर दूसरी जगह नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरे शबद से बदला नहीं जा सकता लेकिन इसके बावजूद उसके क़ाफ़िया-बिंदी और फ़साहत ओ बलाग़त के समस्त अनिवार्यता उपस्थित हैं।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"इस वक़्त कोई और मज़हब ऐसा नहीं है जिसका समर्थक और अनुयायी यह दावा कर सकता हो कि वे भविष्यवाणियाँ कर सकता है या उससे ख़वारिक़ का ज़हूर होता है इस लिए इस पहलू से क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार समस्त किताबों के चमत्कार से बढ़ा हुआ है।"

"यह गर्व क़ुरआन शरीफ़ ही को है कि जहां वह दूसरे झूठे मतों का खंडन करता है और उनकी ग़लत तालीमों को खौलता है वहां असली और हक़ीक़ी तालीम भी पेश करता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

बड़ा सादा तरीक़ा है, जो अहकामात करने के हैं, जो ज़ाहिरी अहकाम तुम्हें नज़र आ रहे हैं उन पर अमल करो, जिनसे रोका गया है उनसे रुक जाओ इसी से ख़ुदा ख़ुश जाएग।

क़ुरआन एक आसान किताब है

जलसा सालाना बंगलादेश पर बुलवाइयों के हमले में जाम-ए-शहादत नोश करने वाले श्रीमान ज़ाहिद हुसैन साहिब के अतिरिक्त श्रीमान कमाल बदाह साहिब आफ़ अल्-जज़ायर, डाक्टर शमीम अहमद मलिक साहिबा आफ़ कैनेडा, श्रीमान फ़र्हाद अहमद अम्मीनी साहिब आफ़ जर्मनी और श्रीमान चौधरी जावेद अहमद बिस्मिल साहिब आफ़ कैनेडा का वर्णन और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज कल ख़ुत्बात में क़ुरआन-ए-करीम की विशेषताओं का वर्णन कर रहा हूँ, ख़ूबियों का वर्णन कर रहा हूँ। इस के मुहासिन और खूबियां वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम कामिल किताब है।

इस सिलसिला में आप अलैहिस्सलाम वज़ाहत करते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "मैं सच्च कहता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ ऐसी कामिल और जामे किताब है कि कोई किताब उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती।" आप ने मिसाल देते हुए फ़रमाया कि "क्या वेद में कोई ऐसी श्रुति है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ का मुक़ाबला करे। अगर ज़बानी इक़रार कोई चीज़ है अर्थात उसके समरात और नतायज की ज़रूरत नहीं तो फिर सारी दुनिया किसी न किसी रंग मैं खुदा तआला का इक़रार करती है। और भगती, इबादत, सदक़ा ख़ैरात को भी अच्छा समझती है और किसी न किसी सूरत में इन बातों पर अमल भी करती है। फिर वेदों ने आकर दुनिया को क्या बख़्शा?" यहां तक हिंदूओं को यह जवाब दे रहे थे। "या तो ये साबित करो कि जो कौमें वेद को नहीं मानती हैं उनमें नेकियां बिल्कुल नष्ट हो चुकी हैं और या कोई और इमतेयाज़ी निशान बताओ।" फ़रमाते हैं : "कुरान--ए-शरीफ़ को जहां से शुरू किया है इन तरक़्क़ियों का वादा कर लिया है जो स्वभावतः रूह तक़ाज़ा करती है। इसलिए सूरः फ़ातिहा में اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (अल् फ़ातिहा : 6) की तालीम की और फ़रमाया कि तुम यह दुआ करो कि हे अल्लाह हम को सिराते-ए-मुस्तक़ीम की हिदायत फ़र्मा।" यह दुआ भी दी और हिदायत फ़रमाने की जब दुआ दी तो इस का मतलब, वादा भी किया कि मैं सिराते-ए-मुस्तक़ीम पर चलाऊंगा। फिर फ़रमाया कि "वह सिरा--ते-ए-मुस्तक़ीम जो उन लोगों की राह है जिन पर तेरे इनाम-ओ-इकराम हुए। इस दुआ के साथ ही सूरः अल् बक़रः की पहली ही आयत में यह बशारत दे दी ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्बकर: 3) "अगर हिदायत की दुआ सिखाई तो उस के हुसूल के लिए एक लाहे-ए-अमल भी बता दिया कि इस पर अमल करो। यह किताब है जिस पर अमल करने से तुम्हें,मुत्तक़ियों को हिदायत मिलेगी। "गोया रूहें दुआ करती हैं और साथ ही क़बूलियत अपना असर दिखाती है और वह वादा दुआ की क़बूलियत का क़ुरआन-ए-मजीद के नुज़ूल की सूरत में पूरा होता है। एक तरफ़ दुआ है और दूसरी तरफ़ उस का नतीजा मौजूद है। यह ख़ुदा तआला का फ़ज़ल और करम है जो उसने फ़रमाया परंतु अफ़सोस दुनिया इस से बे-ख़बर और ग़ाफ़िल है और इस से दूर रह कर हलाक हो रही है।"

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मैं फिर कहता हूँ कि ख़ुदा तआला ने जो इब्तदा ए क़ुरआन-ए-मजीद में मुत्तक़ियों के सिफ़ात वर्णन फ़रमाए हैं उनको मामूली सिफ़ात में है लेकिन जब इन्सान क़ुरआन-ए-मजीद पर ईमान ला कर उसे अपनी हिदायत के लिए दस्तूर-ए-अमल बनाता है तो वह हिदायत के इन आला मदारिज और मुरातिब को पा लेता है जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्ब-करः : 3) मैं मक़सूद रखे हैं।

कुरान-ए-शरीफ़ की इस इल्लत-ए-ग़ाई के तसव्वुर से ऐसी लज़्ज़त और सरूर आता है कि अलफ़ाज़ में हम इस को वर्णन नहीं कर सकते क्योंकि इस से ख़ुदा तआला के ख़ास फ़ज़ल और क़ुरआन-ए-मजीद के कमाल का पता लगता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 317-318 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर इस बात को खोलते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम की तालीम एक पूर्ण तालीम हैं

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "समय की ज़रूरत आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम के अवतरित होने की एक और दलील है और اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ में फ़र्मा दिया।" यानी ज़माना जो था, उस वक़्त हालात जो थे दुनिया के वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेअसत की दलील है क्योंकि ज़रूरत थी उस वक़्त और फिर उसका अंजाम क्या हुआ इस बेअसत का, तालीम कैसी हुई मुकम्मल اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ में फ़र्मा दिया। फ़रमाया कि "इस तरह यह बाब-ए-नबुव्वत की दूसरी फ़सल है। अकमाल से यही मतलब नहीं कि सूरतें उतार दीं बल्कि तकमील-ए-नफ़्स और ततहीर-ए-क़लब की।' क़ुरआन-ए-करीम उतार दिया, तालीम दे दी ,किताब उतार दी। यही कमाल नहीं है बल्कि कमाल यह है कि इन्सान के नफ़्स की हालत को भी मु-कम्मल कर दिया। जो अमल करने वाले हैं उनको मुकम्मल इन्सान बना दिया। ततहीर-ए-क़लब की। उन के दिलों को पाक कर दिया। फ़रमाया कि "वहशियों से इन्सान फिर उसके बाद अक़लमंद और बाइख़लाक़ इन्सान और फिर बाख़ुदा इन्सान बना दिया और ततहीर नफ़्स, तकमील और तहज़ीब-ए-नफ़्स के मदारिज तै करा दिए।' इन्सान को तहज़ीब के भी आला मदारिज सिखा दिए,-नफ़्स के पाक करने के भी आला मदारिज सिखा दिए और उनकी इंतेहा भी कर दी। "और इसी तरह पर किताबुल्लाह को भी पूरा और कामिल कर दिया।" फ़रमाया कि "यहाँ तक कि कोई सच्चाई और सदाक़त नहीं जो क़ुरआन शरीफ़ में न हो। मैंने अग्नी होतरी को बार बार कहा" यह हिंदूओं की मज़हबी तंज़ीम के एक बानी थे। पहले एक फ़िरक़े में थे फिर उन्होंने अपना फ़िर्क़ा शुरू किया या तंज़ीम शुरू की। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उनकी काफ़ी बेहस चलती रही। फ़रमाते हैं कि मैंने उसको बार बार कहा "कि कोई ऐसी सच्चाई बताओ जो क़ुरआन शरीफ़ में न हो मगर वह न बता सका। इस प्रकार एक ज़माना मुझ पर गुज़रा है कि

मैंने बाइबल को सामने रखकर देखा। जिन बातों पर ईसाई नाज़ करते हैं वे समस्त सच्चाईयां मुस्तक़िल तौर पर और निहायत ही अकमल तौर पर क़ु-रआन-ए-मजीद में मौजूद हैं परंतु अफ़सोस है कि मुस्लमानों को इस तरफ़ तवज्जा नहीं। वह क़ुरआन शरीफ़ पर तदब्बुर ही नहीं करते और न उनके दिल में कुछ अज़मत है अन्यथा यह तो ऐसा फ़ख़र का मुक़ाम है कि इस की उदाह-रण दूसरों में है ही नहीं।"

फ़रमाया : "उद्देश्य اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ (अलमायद : 4) की आयत दो पहलू रखती है। एक यह कि तुम्हारी ततहीर कर चुका।" पाक कर दिया तुम्हें। "दोम किताब मुकम्मल कर चुका।" मुकम्मल शरीयत तुम्हारे पर उतार दी। फ़रमाते हैं "कहते हैं जब यह आयत अवतरित हुई वह जुमा का दिन था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी यहूदी ने कहा कि इस आयत के नुज़ूल के दिन ईद कर लेते।' ऐसी कामिल और प्रभावी आयत है कि इस दिन तो ख़ुशी में ईद होनी चाहिए थी। यहूदी ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह कहा। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जुमा ईद ही है।" जुमा वाले दिन यह आयत उत्तरी तो "जुमा ईद ही है परंतु बहुत से लोग इस ईद से बे-ख़बर हैं। दूसरी ईदों को कपड़े बदलते हैं लेकिन इस ईद की पर्वा नहीं करते और मैले कुचैले कपड़ों के साथ आते हैं।" जुमे की एहमियत भी आप वाज़ेह फ़र्मा रहे हैं कि जुमा पढ़ना कितना ज़रूरी है। फ़रमाया कि "मेरे नज़दीक यह ईद दूसरी ईदों से अफ़ज़ल है।" अर्थात जुमा पर भी ख़ास एहतेमाम होना चाहिए। जुमा पर शामिल होने का इंतेज़ाम होना चाहिए। सिर्फ साल के बाद ईद पढ़ना नहीं। फ़रमाया कि "इसी ईद के लिए सूरः जुमा है और इसी के लिए क़सर-ए-नमाज़ है और जुमा वह है जिसमें अस्र के वक़्त आदम पैदा हुए। और यह ईद उस ज़माना पर भी दलालत करती है कि पहला इन्सान इस ईद को पैदा हुआ। क़ुरआन शरीफ़ का ख़ातमा उसी पर हुआ।"

(मल्फ़ूज़ात भग 8 पृष्ठ 399 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि कुरान-ए-करीम हदीस क़ाज़ी है

आप फ़रमाते हैं : "एक और ग़लती अक्सर मुस्लमानों के दरमयान है कि वह हदीस को क़ुरआन शरीफ़ पर मुक़द्दम करते हैं हालाँकि यह ग़लत बात है। क़ुरआन शरीफ़ एक निश्चित मर्तबा रखता है और हदीस का मर्तबा ज़न्नी है।" क़ुरआन-ए-करीम की तालीम तो एक निश्चित तालीम है लेकिन हदीस को हम निश्चित नहीं कह सकते। वह बहुत सारी रिवायतें तो बाद में इकट्ठी हुईं। फ़रमाया कि

"हदीस क़ाज़ी नहीं बल्कि क़ुरआन इस पर क़ाज़ी है।"

फ़ैसला करना क़ुरआन का काम है। "हाँ हदीस क़ुरआन शरीफ़ की तशरीह है।" बहुत सारी हदीसें हैं जिनसे आयत की तशरीह मिल जाती है। "इस को अपने मर्तबा पर रखना चाहिए। हदीस को इस हद तक मानना ज़रूरी है कि क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ न पड़े और इस के मुताबिक़ हो लेकिन अगर उस के मुख़ालिफ़ पड़े तो वह हदीस नहीं बल्कि मर्दूद है। लेकिन कुरान-ए-शरीफ़ के समझने के वास्ते हदीस ज़रूरी है।"

लेकिन साथ ये भी याद रखो कि हदीस में बहुत सारी हदीसें ऐसी हैं जिससे कुछ आयात की वज़ाहत होती है। कुछ बुज़ुर्ग सहाबा की रिवायतें हैं इसलिए उस को समझना भी चाहिए लेकिन यह ख़्याल रखो कि हदीस क़ुरआन-ए--करीम के मुख़ालिफ़ न हो। फ़रमाया कि

"क़ुरआन शरीफ़ में जो अहकाम इलाही नाज़िल हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इसको अमली रंग में करके और करा के दिखा दिया और एक नमूना क़ायम कर दिया। अगर यह नमूना न होता तो इस्लाम समझ में नहीं आ सकता लेकिन असल क़ुरआन है।

कुछ अहल-ए-कशफ़ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बराह-ए--रास्त ऐसी अहादीस सुनते हैं जो दूसरों को मालूम नहीं हुईं या मौजूदा अहादीस की तसदीक़ कर लेते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 363-364 ऐडीशन 1984 ई)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में भी लिखा हुआ है कि मैंने भी कुछ अहादीस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बराह-ए--रास्त सुनी।

(उद्धृत सीरत अल्महदी भाग 1 हिस्सा सोम पृष्ठ 550 रिवायत नंबर : 572)

फिर फ़साहत क़ुरआन के बारे में वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ इबारत में इस क़दर फ़साहत और औचित्य और लताफ़त और नरमी और आब-ओ-ताब रखता है कि अगर किसी सरगर्म नुक्ता चीन और सख़्त मुख़ालिफ़-ए-इस्लाम को कि जो अरबी की अमला-ए-इन शा में कामिल दस्तगाह रखता हो हाकिम बाख़्तयार की तरफ़ से यह ल्रासना से पूर्ण हुक्म सुनाया जाए कि अगर तुम उदाहरणतः बीस बरस के अर्से में कि गोया एक उम्र की मीयाद है। इस तौर पर क़ुरआन की नज़ीर पेश कर के न दिखलाओ कि क़ुरआन के किसी मुक़ाम में से सिर्फ दो-चार सतर का कोई मज़मून लेकर इसी के बराबर या इस से बेहतर कोई नई इबारत बना लाओ। जिसमें वे सब मज़मून अपने समस्त दक़ायक़ हक़ायक़ के आ जाए और इबारत भी ऐसी बलीग़ और फ़सीह हो जैसी क़ुरआन की तो तुमको इस सादगी की वजह से सज़ा-ए-मौत दी जावेगी तो फिर भी बावजूद सख़्त इनाद और अंदेशा रुस्वाई और ख़ौफ़ मौत की नज़ीर बनाने पर हरगिज़ क़ादिर नहीं हो सकता जबकि दुनिया के सदहा ज़बान दानों और इंशा प्रदाज़ों को अपने मददगार ले।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 286 से 297)

अब एक तरफ़ ख़ौफ़ भी है। फ़रमाया कि हाकिम की तरफ़ से इस को बीस साल का अरसा भी दे दिया जाए कि क़ुरआन शरीफ़ जैसी कोई नज़ीर बना कर लाओ, चंद आयतें ही बना के ले आओ, सतरें ही बना के ले आओ लेकिन वह इस के बावजूद नहीं ला सकता। यह है कमाल क़ुरआन-ए-करीम का और उस की फ़साहत का।

आप ने फ़रमाया यह कोई ख़्याली या फ़र्ज़ी बात नहीं है बल्कि जब से कि क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल हुआ है यह चैलेंज दुनिया के सामने है कि तुम ले के आओ। आज भी कुछ इस्लाम मुख़ालिफ़ उस की नज़ीर लाने की कोशिश करते हैं। आए दिन कोई न कोई शोशा छोड़ देता है और यह दावा करते हैं कि हम मिसाल पेश करते हैं लेकिन क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत-ओ-बलाग़त के क़रीब भी नहीं पहुंच सकते। सिर्फ दावे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "फ़साहत, बलाग़त में (इस का मुक़ाबला असंभजमाअतहै) उदाहरणतः सूरः फ़ातेहा की मौजूदा तर्तीब छोड़कर कोई और तर्तीब प्रयोग करो तो वे मतालिब-ए-आलीया और मक़ासद-ए-उज़्मा जो इस तर्तीब में मौजूद हैं मुम्किन नहीं कि किसी दूसरी तर्तीब में वर्णन हो सकें। कोई सी सूरत ले लो। خواہ قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد (अल् इखलास : 2) ही क्यों न हो। जिस क़दर नरमी और मुलातिफ़त की रियाइत को मलहूज़ रख कर इस में मआरिफ़ और हक़ायक़ हैं वह कोई दूसरा वर्णन न कर

सकेगा। यह भी केवल क़ुरआन का चमत्कार ही है। मुझे हैरत होती है जब कुछ नादान मुक़ामात-ए-हरीरी या सबा मोअलक" ये दो किताबें हैं" को बेनज़ीर और बेमिसल कहते हैं। कि बहुत आला किताबें हैं। उनकी तो मिसाल ही कोई नहीं। फ़रमाते हैं कि "और इस तरह पर क़ुरआन-ए-करीम की अद्वितीयता पर हमला करना चाहते हैं। इतना नहीं समझते कि अव्वल तो हरीरी के लेख ने कहीं उस के बेनज़ीर होने का दावा नहीं किया और दूसरा यह कि हरीरी का लेखक ख़ुद क़ुरआन-ए-करीम की एजाज़ी फ़साहत का क़ायल था। इसके अतिरिक्त सद-मार्ग पर आपरो लगाने वाले और सदाक़त को ज़हन में नहीं रखते बल्कि उनको छोड़कर महिज़ अलफ़ाज़ की तरफ़ जाते हैं। ऊपर वर्णित किताबें हक़ और हिक्मत से ख़ाली हैं। एजाज़ की ख़ूबी और वजह तो यही है कि हर एक किस्म की रियाइत को दृष्टिगत रखे। फ़साहत और बलाग़त भी हाथ से जाने न दे। सदाक़त और हिक्मत को भी न छोड़े।

यह चमत्कार केवल क़ुरआन-ए-शरीफ़ ही का है' कि फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है, सच्चाई भी है, हिक्मत की बातें भी हैं

"जो सूरज की तरह रोशन है और हर पहलू से अपने अंदर एजाज़ी ताक़त रखता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 84-85 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ के चमत्कार फ़साहत-ओ-बलाग़त के जवाब में एक दफ़ा पादरी फ़ंडर ने हरीरी और अबुल-फ़ज़ल और कुछ अंग्रेज़ी किताबों को पेश किया था। मुद्दत की बात है। हमने उस वक़्त भी यही सोचा था कि यह झूठ बोलता है क्योंकि अव्वल तो उन लेखकों को कभी यह दावा नहीं हुआ कि उनका कलाम बेमिसल है बल्कि वह ख़ुद अपनी कम-माइगी का हमेशा इक़रार करते रहे हैं और क़ुरआन-ए-शरीफ़ की तारीफ़ करते हैं। दूसरा उन लोगों की किताबों में अर्थात शब्दों के अधीन हो कर चलता है। केवल शब्द जोड़े हुए होते हैं। क़ाफ़िया के वास्ते एक लफ़्ज़ के मुक़ाबले दूसरा लफ़्ज़ तलाश किया जाता है और कलाम में हिक्मत और मआरिफ़ का लिहाज़ नहीं होता और क़ुरआन शरीफ़ में इल्तिज़ाम है हक़ और हिक्मत का।" सच्चाई भी है। हिक्मत भी है। केवल अलफ़ाज़ का जोड़ना नहीं है। इस में ख़ूबसूरती पैदा नहीं की गई। फ़रमाया कि "असल में इस बात का निबाहना कि हक़ और हिक्मत के कलमात के साथ क़ाफ़िया भी दरुस्त हो यह बात ताईद-ए-इलाही से हासिल होती है।" यह असल चीज़ है कि हक़ और हिक्मत भी हो और क़ाफ़िया भी दरुस्त हो तब पता लगता है ताईद-ए-इलाही है। "अन्यथा इन्सानों के कलाम ऐसे होते हैं जैसा कि हरीरी वग़ैरा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 205 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम एक मज्लिस में इस बारे में मज़ीद फ़रमाते हैं कि तफ़सीर एजाजुल मसीह के मुताल्लिक़ यह वर्णन था कि मुख़ालेफ़ीन में से किसी को ख़ुदा ने यह ताक़त नहीं दी कि इस का मुक़ाबला कर सके। यह तफ़सीर का वर्णन हो रहा था। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक मज्लिस में यह वर्णन हो रहा था तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ के एक चमत्कार होने के मुताल्लिक़ दो मज़हब हैं। एक तो यह कि ख़ुदा तआला ने मुख़ालेफ़ीन से सिर्फ-ए-हिम्मत कर दिया। अर्थात उन लोगों को तौफ़ीक़ न हुई कि इस वक़्त मुक़ाबला में कुछ करके दिखलाते और दूसरा मज़हब जो कि सही और सच्चा और पक्का मज़हब है और हमारा भी वही मज़हब है। वह यह है कि मुख़ालिफ़ ख़ुद इस बात में आजिज़ थे कि मुक़ाबला कर सकते। असल में उनके इलम और अक़्ल छीने गए थे। क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार हमारी तफ़सीरुल - क़ुरआन के मुआमला से ख़ूब समझ में आ सकता है। हज़ारों मुख़ालेफ़ मौजूद हैं जो आलिम फ़ाज़िल कहलाते हैं। कई ग़ैरत दिलाने वाले अलफ़ाज़ भी विज्ञापनों में लिखे गए हैं परंतु कोई ऐसा न करसका कि इस निशान का मुकाबला करता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 217-218 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आप की कुतुब को इस नज़रिए से भी हमें पढ़ना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ की समझ आए।

फिर एक मौक़ा पर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ को जो चमत्कार अता फ़रमाया है वे आला दर्जा की अख़लाक़ी तालीम और उसूल तमद्दुन का है और इस की बलाग़त और फ़साहत का है जिसका मुक़ाबला कोई इन्सान कर नहीं सकता ऐसा ही चमत्कार ग़ैब की ख़बरों और भविष्यवाणियों का है। इस ज़माने का कोई जादूगरी में उस्ताद हरगिज़ ऐसा करने का दावा नहीं करता।" फ़साहत-ओ-बलाग़त भी है और ग़ैब की ख़बरें, भविष्यवाणियाँ भी मौजूद हैं। यह कोई जादूगर तो नहीं दिखा सकता। जादूगर तो ऐसी बातें नहीं दिखा सकता, न दावा कर सकता। फ़रमाया "और इस तरह अल्लाह तआला ने हमारे निशानात को एक तमीज़ साफ़ अता फ़रमाई है ताकि किसी शख़्स को हीला हुज्जत बाज़ी का न रहे और इस तरह ख़ुदा तआला ने अपने निशानात खोल खोल कर दिखाए हैं जिनमें कोई संदेह अपना दख़ल नहीं पैदा कर सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 172 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत के बारे में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "लोगों की फ़साहत और बलाग़त अलफ़ाज़ के मातहत होती है और इस में सिवाए क़ाफ़िया-बंदी के और कुछ नहीं होता। जैसे एक अरब ने लिखा है سَافَرْتُ اِلٰی رُوْمٍ وَاَنَا عَلٰی جَمَلٍ مَالُوْمٍ मैं रुम को रवाना हुआ और मैं एक ऐसे ऊंट पर सवार हुआ जिसका पेशाब बंद था। ये अलफ़ाज़ केवल क़ाफ़िया--बंदी के वास्ते लाए हैं।

यह क़ुरआन शरीफ़ का एजाज़ है कि इस में सारे अलफ़ाज़ ऐसे मोती की तरह पिरोए गए हैं और अपने अपने मुक़ाम पर रखे गए हैं कि कोई एक जगह से उठा कर दूसरी जगह नहीं रखा जा सकता और किसी को दूसरे लफ़्ज़ से बदला नहीं जा सकता लेकिन इस के बावजूद उस के क़ाफ़िया-बिंदी और फ़साहत ओ बलाग़त के समस्त लवाज़म मौजूद हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 172-173 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत- का हुस्न वर्णन फ़रमाते हैं। एक मज्लिस में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "जिस क़दर ये निशानात और आयात यहां ज़ाहिर हो रही हैं यह वास्तजमाअतमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के ख़वारिक़ और मोजज़ात और यह भविष्यवाणियाँ क़ुरआन शरीफ़ ही की पेश गोईआं हैं क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के इत्तिबा और क़ुरआन शरीफ़ ही की तालीम के समरात हैं। और इस वक़्त कोई और मज़हब ऐसा नहीं है जिसका पैरौ और मतबा यह दावा कर सकता हो कि वह भविष्यवाणियाँ कर सकता है या उस से ख़वारिक़ का ज़हूर होता है। इस लिए इस पहलू से क़ुरआन शरीफ़ का चमत्कार समस्त किताबों के एजाज़ से बढ़ा हुआ है।"

आपके अपने मोजज़ात जो हैं वे भी क़ुरआन शरीफ़ की वजह से ही हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी की वजह से हैं।

फिर फ़रमाया कि "फिर एक और पहलू फ़साहत बलाग़त ऐसी आला दर्जा की और मुसल्ल है कि इंसाफ़ पसंद दुश्मनों को भी उसे मानना पड़ा है।

कुरान-ए-शरीफ़ ने فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ (अल्बकरः : 24) का दावा किया लेकिन आज तक किसी से मुम्किन नहीं हुआ कि इस की मिसल ला सके।" यह दावा क़ुरआन शरीफ़ का है कि इस जैसी सूरत ले के आओ। "अरब जो बड़े फ़सीह-ओ-बलीग़ बोलने वाले थे और ख़ास मौक़ों पर बड़े बड़े मजमा करते और उनमें अपने क़सायद सुनाते थे वे भी इस के मुक़ाबला में आजिज़ हो गए। और फिर क़ुरआन शरीफ़ की फ़साहत-ओ-बलाग़त ऐसी नहीं है कि इस में सिर्फ अलफ़ाज़ का ततब्बो किया जावे" उनकी पैरवी करो, अर्थात उनकोfollow करो "और अर्थों और मुतालिब की परवाह न की जाए बल्कि जैसा आला दर्जा के अलफ़ाज़ एक अजीब तर्तीब के साथ रखे गए हैं उसी तरह पर हक़ायक़ और मआरिफ़ को उनमें वर्णन किया गया है और यह रियायत इन्सान का काम नहीं कि वह हक़ायक़ और मआरिफ़ को वर्णन करे और फ़साहत-ओ-बलाग़त के मुरातिब को भी मलहूज़ रखे।"

फ़रमाया कि "एक जगह फ़रमाता है يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ (अल् बय्यनः : 3-4) अर्थात उन पर ऐसे सहायफ़ पढ़ता है कि जिनमें हक़ा-यक़-ओ-मआरिफ़ हैं। इंशा वाले जानते हैं कि इंशा परदाज़ी में पाकीज़ा तालीम और अख़लाक़-ए-फाज़िला को मलहूज़ रखना बहुत ही मुश्किल है और फिर ऐसी मोस्सर और जाज़िब तालीम देना जो सिफ़ात-ए-रज़ीला को दूर करके भी दिखावे और उनकी जगह आला दर्जा की खूबियां पैदा कर दे। अरबों की जो हालत थी वह किसी से पोशीदा नहीं। वे सारे ऐबों और बुराईयों का मजमूआ बने हुए थे और सदीयों से उनकी यह हालत बिगड़ी हुई थी परंतु किस क़दर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ और बरकात में क़ुव्वत थी कि तेईस बरस के अंदर कुल देश की काया पलट दी। यह तालीम ही का असर था।" फ़रमाया कि "एक छोटी से छोटी सूरत भी अगर क़ुरआन शरीफ़ की लेकर देखी जाए तो

मालूम होगा कि इस में फ़साहत-ओ-बलाग़त के मुरातिब के इलावा तालीम की ज़ाती ख़ूबियों और कमालात क़व्वास में भर दिया है।सूरः इख़लास ही को देखो कि तौहीद के कुल मरातिब को वर्णन फ़रमाया है।" छोटी सी सूरत है लेकिन तौहीद का पूरा मज़मून इस में वर्णन कर दिया है "और हर किस्म के शिर्कों का रद्द कर दिया है। इसी तरह सूरत फ़ातेहा को देखो किस क़दर एजाज़ है। छोटी सी सूरत जिसकी सात आयतें हैं लेकिन दरअसल सारे क़ुरआन शरीफ़ का फ़न और ख़ुलासा और फ़हरिस्त है और फिर इस में ख़ुदा तआला की हस्ती, उस के सिफ़ात, दुआ की ज़रूरत, उस की क़बूलीयत के अस्बाब और ज़राए, मुफ़ीद और सूदमंद दुआओं का तरीक़, नुक़्सान रसां राहों से बचने की हिदायत सिखलाई है वहां दुनिया के समस्त मज़ाहिब बातिला का रद्द इस में मौजूद है।"इस सूर फ़ातिहा में छोटी सी सूरत में सारी बातें आ गईं। "अक्सर किताबों और मज़हब वालों को देखोगे कि वे दूसरे मज़हब की बुराईयां और नुक़्स वर्णन करते हैं और दूसरी तालीमों पर नुक्ता-चीनी करते हैं परंतु इन नुक्ता चीनियों को पेश करते हुए यह कोई अहल मज़हब नहीं करता कि इस के बिल्मुक़ाबिल कोई उम्दा तालीम भी पेश करे और दिखाए कि अगर मैं अमुक बुरी बात से बचाना चाहता हूँ तो इस की बजाय यह अच्छी तालीम देता हूँ यह किसी मज़हब में नहीं,

यह फ़ख़र क़ुरआन शरीफ़ ही को है कि जहां वह दूसरे मज़ाहिब बातिला का रद्द करता है और उनकी ग़लत तालीमों को खौलता है वहां असली और हक़ीक़ी तालीम भी पेश करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 46 से 48 ऐडीशन 1984 ई.)

यह ख़ूबसूरती ऐसी है जिसे आज के तथा कथित पढ़े लिखे भी रद्द नहीं कर सकते। बहुत से अवसरों पर मैंने देखा है कि जब ग़ैरों के सामने क़ुरआन शरीफ़ की तालीम के मुताबिक़ किसी मसला का हल रखा जाए तो वे उसे तस्लीम करते हैं।

क़ुरआन-ए-करीम की वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

क़ुरआन एक आसान फ़हम किताब है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "कुछ नादान लोग कहा करते हैं कि हम क़ुरआन शरीफ़ को नहीं समझ सकते इस वास्ते उसकी तरफ़ तवज्जा नहीं करनी चाहिए कि यह बहुत मुश्किल है। यह उनकी ग़लती है।' बहाना बना दिया कि बड़ा मुश्किल है जी क़ुरआन शरीफ़ को समझना। इस को हम समझ नहीं सकते इसलिए ज़्यादा तवज्जा की ज़रूरत नहीं। बस पढ़ लिया तो काफ़ी है। फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ ने एतेक़ादी मसाइल को ऐसी फ़साहत के साथ समझाया है जो बेमिसल और बेमानिंद है और इसके दलायल दिलों पर-असर डालते हैं।' जहां तक एतेक़ादी मसायल का ताल्लुक़ है बड़ा खुल के बताया है। फ़रमाया कि "यह क़ुरआन ऐसा बलीग़ और फ़सीह है कि अरब के बादिया नशीनों को जो बिल्कुल अनपढ़ थे समझा दिया था तो फिर अब क्योंकर उस को नहीं समझ सकते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 228 ऐडीशन 1984 ई.)

वे अनपढ़ लोग जो थे, गांजमाअतमें रहने वाले थे बिल्कुल जाहिल थे बल्कि इन्सानों से भी नीचे गिरे हुए थे जिनको बाख़ुदा इन्सान बनाया। उनको अगर समझ आ गई तो अब क्यों नहीं तुम लोगों को समझ आ सकती जिनमें अक्सरियत कुछ न कुछ पढ़े लिखो की है। फ़रमाया कि

"सीधी और सच्ची और सादा आम फहम मंतिक़ वह है जो क़ुरआन शरीफ़ में है इस में कोई पेचीदगी नहीं। एक सीधी राह है जो ख़ुदा तआला ने हमको सिखला दी है। चाहिए कि आदमी क़ुरआन शरीफ़ को ग़ौर से पढ़े। इस के अमर और नही को अलग अलग देख रखे।" जो बातें कहने वाली, अमल करने वाली हैं उनको देखे। जिनसे मना किया गया है उनको देखे, अलैहदा रखे "और उन पर अमल करे और इसी से वह अपने ख़ुदा को ख़ुश कर लेगा।

बड़ा सादा तरीक़ा है, जो अहकामात करने के हैं, जो ज़ाहिरी अहकाम तुम्हें नज़र आ रहे हैं उन पर अमल करो, जिनसे रोका गया है उनसे रुक जाओ इसी से ख़ुदा ख़ुश हो जाएगा।

"बाक़ी मंतक़ियों और सूफ़ियों ने जो इस्तेलाहें बनाएँ हैं वे अधिकतर लोगों के वास्ते ठोकर का मूजिब हो जाती हैं क्योंकि उनमें पेचीदगियां और मुश्किलात हैं।"मंतक़ियों और सूफ़ियों के पीछे न चलो। उन्होंने तो ऐसी-ऐसी इस्तेलाहें बना दी हैं, ऐसे ऐसे मुश्किल रंग में क़ुरआन शरीफ़ को पेश किया है कि इस से ठोकर ही लगती है और कुछ नहीं समझ आती। अतः अगर दुनिया में लोगों को मुश्किल पेश आती है तो मंतक़ियों और सूफ़ियों की वजह से या तथा कथित उल्मा की वजह फ़रमाया : "एक बुज़ुर्ग ने जिस पर हम हुस्न-ए-ज़न रखते हैं कि उसने किसी नेक नीयती से लिखा होगा। जबकि उसका क़ौल सही नहीं है। ये लिखा है कि शेख़ अब्दुलक़ादिर जलानी कामिल न थे क्योंकि उनका पूरे तौर पर नुज़ूल न था केवल उँचाई थी।" ऊपर जाना था। अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर कोई इल्हामात इस तरह नहीं होते थे बल्कि उनकी दुआएं क़बूल हो जाती थीं। "इसी वजह से उनसे बहुत सी करामातें सादर हुईं। अगर नुज़ूल पूरा होता तो कोई करामत सादर न होती।' यह कहने वाले ने कहा। फ़रमाया कि "इस क़ौल में जिस क़दर तख़ालुफ़-ए-क़ुरआन है वह ज़ाहिर है। यह ऐसा क़ौल है कि क़ुरआन और हदीस से सरासर मुख़ालिफ़ है। वास्तव में शेख़ अब्दुलक़ादिर जीलानी ख़ुदा तआला के कामिल बंदों में से थे। अगर उन पर चमत्कारों के मुताल्लिक़ एतराज़ किया जाए तो फिर यह आरोप समस्त अंबिया पर वारिद होता है।" लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि उनके बारे में कुछ लोगों ने, उनके मानने वालों ने करामतों के बारे में बढ़ोतरी से भी काम लिया है और इस पर हाशिया-आराई कर दी। ये चीज़ें जो हैं वह उनके बारे में ग़लत हैं। हाँ मोजज़ात होते हैं। वह मोजज़ात जो कानून-ए-क़ुदरत और शरीयत के तहत मुम्किन हैं वह होते हैं, अंबिया से भी होते हैं वही उनसे भी हुए। फ़रमाया कि "ये उन सूफ़ियों की ग़लत इस्तलाहों की पैरवी का नतीजा है जिनकी तसदीक़ क़ुरआन और हदेस से नहीं मिलती।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 5-6 ऐडीशन 1984 ई)

यह या तो एक फ़रीक़ है जो बिल्कुल मानता ही नहीं या दूसरा जो मानता है वह इतना ज़्यादा मुबालग़े से काम लेता है कि उसने हद ही कर दी है। तो जो न मानने वाले हैं वह सूफ़ियों की वजह से हैं और जो मानने वाले हैं वह भी ग़लत किस्म के लोगों की तशरीहात की वजह से हैं। इसलिए इस बात पर हमेशा ग़ौर करते रहना चाहिए कि इस को कानून-ए-शरीयत और क़ानून-ए-क़ुदरत के तहत और अंबिया के मोजज़ात के तहत परखो। अनबया से बढ़कर कोई चमत्कार नहीं दिखा सकता।

क़ुरआन-ए-करीम हक़ीक़ी ख़ुदा को प्रस्तुत करता है।

इस बारे में आप फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला का शुक्र है कि क़ुरआन शरीफ़ ने ऐसा ख़ुदा पेश नहीं किया जो ऐसी नाकिस सिफ़ात वाला हो कि न वे रूहों का मालिक है न जर्रात का मालिक है न उनको निजात दे सकता है न किसी की तौबा क़बूल कर सकता है बल्कि हम क़ुरआन शरीफ़ की दृष्टि से उस ख़ुदा के बंदे हैं जो हमारा मुख़ालिक़ है हमारा मालिक है। हमारा राज़िक़ है। रहमान है। रहीम है। मालिक-ए-यौमिद्दीन है। मोमिनों के वास्ते यह शुक्र का मुक़ाम है कि उसने हमको ऐसी किताब अता की जो उस की सही सिफ़ात को ज़ाहिर करती है। यह ख़ुदा तआला की एक बड़ी नेअमत है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 98 ऐडीशन 1984 ई.)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलम-ओ-मार्फ़त और क़ुरआन-ए-करीम की विशेषोताओं और मुक़ाम-ओ-मर्तबा की बातें इन शा अल्लाह आइन्दा भी वर्णन होंगी। इस वक़्त मैं यहां ख़त्म करता हूँ क्योंकि अब मैं ने कुछ मरहूमीन का भी वर्णन है।

अल्लाह तआला हमें इन बातों को समझने और अमल करने की और क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ने की और समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अब मैं वह वर्णन करता हूँ विशेषता बंगलादेश के शहीद का वर्णन करना है। इस के बाद मैं नमाज़-ए-जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

बंगलादेश में जैसा कि हमें पता है पिछले जुमा को जलसा हो रहा था और जलसे के दौरान बुलवाइयों ने और दहश्तगरदों ने हमला किया। पुलिस ने और इंतेज़ामीया ने पहले यही तसल्ली दिलाई थी कि वे कंट्रोल कर लेंगे और कुछ नहीं होगा इसलिए तुम जलसा करो। जलसा जारी रहा लेकिन जब लोग आ गए तो पुलिस वहां तमाशाई बनी खड़ी रही यहां तक कि चंद घंटे गुज़रने के बाद फिर ऊपर से जब उनको हुक्म मिला तो तब उन्होंने ऐक्शन लिया लेकिन उस वक़्त तक बहुत कुछ हो चुका था। बहरहाल इस फ़साद में हमारे एक भाई, ज़ाहिद हसन साहिब भी शहीद हुए।

जो अबूबकर सिद्दीक़ साहिब बंगलादेश के बेटे थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

नैशनल अमीर अब्दुह लाइल साहिब लिखते हैं कि ज़ाहिद हसन साहिब 3

मार्च को अहमदनगर पंजगढ़ ज़िला में आयोजित होने वाले जलसा के अवसर पर गेट और अहाते का पहरा देते वक़्त मुख़ालेफ़ीन के हमलों के नतीजे में पच्चीस साल की उम्र में शहादत पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम ने 2019 ई. में बैअत की थी। तीन माह बाद ही वसीयत की दरख़ास्त जमा करवा दी थी। उनका ख़ानदान अहल-ए-हदीस फ़िरक़े से ताल्लुक़ रखता था। अहमदीयत क़बूल करने के बाद शहीद मरहूम ने अपने माता पिता को तब्लीग़ करनी शुरू कर दी जिसके नतीजे में 2020 ई. में उनके वालदैन ने भी बैअत करने की सआदत पाई। बैअत के बाद शहीद मरहूम बाक़ायदा मुझे ख़त भी लिखा करते थे।

उनकी बैअत और अहमदी होने का वाक़िया जो है यूं है कि उनके एक क्लास फ़ैलो मुहम्मद रिफ़अत हुसैन थे जो बोगरह शहर में पंद्रह (Pundra) यूनीवर्सिटी आफ़ साईंस में पढ़ते थे ये दोनों साईंस ऐंड टैक्नोलोजी में बी एस.सी. कर रहे थे। इस अहमदी दोस्त ने, बच्चे ने उनको तब्लीग़ की और दो साल की तब्लीग़ के बाद जब उन पर अहमदीयत की सच्चाई अयाँ हुई तो उन्होंने बैअत कर ली। अव्वल साहिब लिखते हैं कि जलसा सालाना के आग़ाज़ से जलसा गाह की चारों अतराफ़ से मुल्ला लोग अपने टोलियों के साथ जलसा गाह की दीवार और मग़रिबी हिस्से में वाक़्य गेट पर हमला करने लगे। पथराओ के इलावा देसी असलाह से, कुल्हाड़ों से, सरिया इत्यादि से ये लोग हमला कर रहे थे और जहां भी अवसर मिला वे आग लगाते रहे। ख़ुद्दाम बड़ी दिलेरी से अपनी डयूटियाँ बजा लाते रहे। उमूमी तौर पर तो बाहर जाने का अवसर नहीं था सिवाए उनको जिनकी डयूटी लगी हुई थी। सब लोग, ख़ुद्दाम अंदर ही थे, अंदर से ही हिफ़ाज़त कर रहे थे। कहते हैं कि जलसा शुरू होने के पौने दो घंटे के बाद जब हमला--आवर लोग दीवार का एक हिस्सा तोड़ने में कामयाब हो गए तो फिर ख़ुद्दाम को हर क़ीमत पर दीवार और जलसा-ए-गाह की हिफ़ाज़त यक़ीनी बनाने के लिए कहा गया। उस वक़्त गेट नंबर एक पर मुतय्यन ज़ाहिद हस्न शहीद अपने साथियों के साथ गेट से निकल कर जलसा-ए-गाह की दीवार पर हमला करने वालों को हटाने के लिए निहायत तेज़ी और बहादुरी से जा पहुंचे। इसी अस्ना में एक मौक़ा ऐसा आया कि मुक़ाबला करते करते ये साथियों से बिछड़ गए। अतः अवसर पा कर इस अकेले को हमला आवरों ने जा लिया। इस के सर के पीछे कुल्हाड़ी या कोई और तेज़ असलाह से हमला कर दिया और मौसूफ़ को घसीटते हुए कुछ फ़ासले पर ले गए। उनके चेहरे और जिस्म के दीगर हिस्सों पर निहायत बेदर्दी और सफ़्फ़ाकी से वार करते हुए दरिन्दा होने का सबूत दिया।

शहीद मरहूम ज़ाहिद हुस्न को इतनी बेदर्दी से क़तल किया गया कि उसे शनाख़्त करने में दो घंटे की ताख़ीर हुई। यह है इन मुस्लमानों का हाल। अल्लाह और रसूल के नाम पर ज़ुलम-ओ-बरबरीयत की इंतेहा की। आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो काफ़िरों से जंगों में भी दुश्मनों का मुसला करने से मना फ़रमाया लेकिन ये लोग अल्लाह और रसूल का नाम लेने वालों के साथ यह सुलूक करते हैं।

अल्लाह ही है जो उन को पकड़े और फिर उन की ख़ाक उड़ाए।

यह कहते हैं कि उनका डयूटी identity card भी क़ातिलों ने अलग कर दिया, उनके सीने से उतार दिया लेकिन क्योंकि ख़ुद्दाम की डयूटी के कपड़ों में मलबूस थे इसलिए कुछ न कुछ पहचान हो गई। फिर बहरहाल जब उनकी लाश हासिल कर ली गई तो फिर नमाज़ तहज्जुद और फ़ज्र के बाद मौसूफ़ का जनाज़ा अदा किया गया। जलसे में शामिल होने वाले हज़ारों की तादाद में मुल्क भर से आए हुए अहमदी इस में शामिल हुए। नमाज़-ए-जनाज़ा के वक़्त सब हाज़ेरीन पर ऐसी हालत तारी हुई जिसकी कोई मिसाल नहीं। बड़ी रिक़्क़त तारी थी वहां। सबके सब ख़ुदा के हुज़ूर रो रहे थे। इस के बाद क़ानूनी मजबूरी के तहत लाश का पोस्टमार्टम किया गया और बाद दोपहर क़ाफ़िले के साथ शहीद मरहूम का जसद-ए-ख़ाकी उनके आबाई गांव के लिए बज़रीया एम्बूलैंस रवाना कर दिया गया जहां रात दस बजे उन्हें सपुर्द-ए-ख़ाक कर गया।

शहीद मरहूम के क़रीब तरीन दोस्त अज़ीज़म रिफ़अत हुसैन साहिब कहते हैं कि यूनीवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान उनसे बड़ी दोस्ती हुई। मौसूफ़ फ़िल्ली तौर पर बहुत शरीफ़ुल नफ़्स थे लेकिन इबादात में दिलचस्पी बहुत कम थी लेकिन क़बूलीयत-ए-अहमदीयत के बाद उनकी काया पलट गई।

और नमाज़ बाजमाअत के आदी हो गए। मौसूफ़ इंतेहाई आजिज़, नरम ख़ू और मुनकसिरुल मिज़ाज नौजवान थे। पाँच साल के अर्से में कहते हैं मैंने उन्हें कभी किसी से ऊंची आवाज़ में बातें करते हुए नहीं सुना। मौसूफ़ की सआदत का पता इस बात से भी लगता है कि बैअत करने के चंद माह बाद ही मौसूफ़ ने वसीयत करने की सआदत हासिल कर ली। फिर कहते हैं कि अज़ीज़म ज़ाहिद हुस्न शहीद ख़ुद्दामुल अहमदिया के फ़आल रुकन थे। ब-वक़्त शहादत मौसूफ़ ढाका और बरीसाल के इलाक़ाई मोतमिद ख़ुद्दामुल अहमदिया के तौर पर ख़िदमत बजा ला रहे थे नीज़ ढाके के मोती झील हलक़ा के ज़ईम भी थे।

इसी मज्लिस के क़ायद और मुहतमिम मुक़ामी जनाब ज़हूरुल इस्लाम साहिब कहते हैं कि मौसूफ़ मज्लिसी कामों में निहायत बाक़ायदा और अपने सीनीयरज़ के बहुत मुतीअ थे। मुफ़व्विज़ा डयूटी और ख़िदमत पूरी तरह बशाशत के साथ अदा करते थे। सलाम में हमेशा पहल करते थे। हमेशा मुस्कुराते रहते थे। कहते हैं कि साल या सवा साल क़बल मौसूफ़ ने बी एस.सी पास करने के बाद एक कंपनी में सर्विस का आग़ाज़ किया और सर्विस के सिलसिले में अगर कभी ढाके से दूरदराज़ किसी जगह जाना होता तो हसब-ए-मौक़ा क़रीब तरीन मजालिस का दौरा भी करते। उनके फेसबुक एकाऊंट में ज़ाती प्रोफ़ाइल के तौर पर आयत وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (अल्तलाक़ : आयात : 4) का तर्जुमा लिखा हुआ है।

मुरब्बी शरीफ़ अहमद साहिब कहते हैं मैं उस वक़्त तेबाड़ीह जमाअत में मुतय्यन था जबकि शहीद मौसूफ़ अपने दोस्त रिफ़अत हुसैन साहिब के साथ बतौर ज़ेरे-ए-तब्लीग़ दोस्त तशरीफ़ लाए। मौसूफ़ ने बैअत करने की ख़ाहिश ज़ाहिर की तो मैंने उनसे कहा कि आप मज़ीद वक़्त ले लें, अच्छी तरह छानबीन कर लें। मौसूफ़ ने कहा कि जबकि मैं जमाअत की सच्चाई का क़ायल हो चुका हूँ फिर भी मैं आपके कहने पर बाद में आकर बैअत करूँगा। इसलिए अगली दफ़ा या उसके बाद की दफ़ा मौसूफ़ ने बैअत कर ली थी। बैअत करने के बाद ये मुरब्बी साहिब कहते हैं कि मौसूफ़ ने अहमदियत को और निज़ाम-ए-ख़िला-फ़त को समझने के लिए पूरी कोशिश शुरू कर दी। बड़ी गहराई से इलम हासिल किया। मुझे भी ख़त लिखते रहते थे जैसा कि मैंने वर्णन किया। आख़िरी ख़त जो उन्होंने लिखा है वह भी उन्होंने जलसे पर जाते हुए लिखा कि हम ट्रेन पर जलसे पर जा रहे हैं और दुश्मन के मंसूबे बड़े ख़तरनाक हैं। कुछ जगह उन्होंने आग भी लगाई हैं लेकिन हम इन शा अल्लाह तआला जलसा करेंगे और अपना इज़हार ईमान का किया। फिर ये भी इज़हार किया कि मेरे रिश्तेदार और गांव वाले सब अहमदी हो जाएं। वह सारा गांव अहमदी हो जाए। यह उनका आख़िरी ख़त है जो उन्होंने लिखा।

एक ख़ादिम वर्णन करते हैं कि शहीद इतने आजिज़ कारकुन थे कि जब भी उन्हें किसी ने कोई काम दिया, उन्होंने इंकार नहीं किया। कहते हैं कभी कभी मैं उनसे मज़ाक़ मैं कहता था कि ज़ाहिद भाई अगर हम इतना काम करते रहे तो ख़त्म हो जाऐंगे। यह सुनकर भी हमेशा हंस दिया करते थे। शहीद मूसी भी थे। कहते हैं मैंने उनसे जानना चाहा कि आपकी इतनी जल्दी वसीयत करने की क्या वजह है तो उन्होंने कहा कि इमाम महदी सच्चे थे। उन्होंने जो कुछ कहा वह सच्च है। मसीह मौऊद ने वसीयत करने का इरशाद फ़रमाया इसलिए मैंने वसीयत कर ली है। कहते हैं में उनकी बात सुनकर हैरान रह गया कि वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर इतना गहरा ईमान रखते हैं। फिर कहते हैं कि जब एक दफ़ा शहीद मरहूम से उनकी क़बूल-ए-अहमदीयत की एक बुनियादी वजह पूछी गई तो उन्होंने कहा कि आज तक इमाम महदी या मसीह और नबी का दावा करने वाला न तो कोई शख़्स कामयाब हुआ और न ही कोई जमाअत। केवल हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादयानी अलैहिस्सलाम ही हैं। अगर आप अलैहिस्सलाम सच्चे न होते तो आपका हाल भी झूठे मुद्दियों जैसा होता।

शहीद के माता पिता ज़िंदा हैं। दोनों अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदी हैं जैसा कि पहले वर्णन किया। शहीद मरहूम अपने वालदैन के इकलौते बेटे थे और अभी ग़ैर शादीशुदा थे। दो बहनें हैं उनकी। दोनों शादीशुदा हैं लेकिन ग़ैर अहमदी हैं। ज़ेरे तब्लीग़ हैं। अल्लाह तआला उनके वालदैन को भी सब्र अता करे, हौसला अता फ़रमाए। जैसा कि मैंने कहा इकलौता बेटा था बहुत बड़ा सदमा है। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही सदमा बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ मिलती है। शहीद के भी दर्जात बुलंद फ़रमाए। बहरहाल

यह शहीद तो अल्लाह तआला के इरशाद के मुताबिक़ हमेशा की ज़िंदगी पा गए। अल्लाह तआला हमेशा उनसे ख़ास सुलूक फ़रमाता रहे और उन ज़ालिमों की पकड़ के भी जल्द सामान फ़रमाए।

दुश्मन समझता है कि वह जमाअत के अफ़राद को इस तरह आज़मा कर और सख़्तियां वारिद करके उनके हौसले पस्त कर देंगे मगर यह उसके बिल्कुल उलट है। वहाँ से भी कुछ ख़त मुझे आए हैं। कुछ नौजवानों ने भी लिखा है कि अगर मज़ीद शहादतों की ज़रूरत है तो यह दुआ करें कि हम भी उनमें शामिल हो जाएं। अतः ऐसे लोगों का यह कमीना दुश्मन क्या बिगाड़ सकता है।

बहरहाल हमें दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उनके उपद्रव से हमें बचाए और हम पर रहम और फ़ज़ल फ़रमाए। आजकल दुआओं पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दें।

दूसरा जो जनाज़ा है जिसका में वर्णन करना चाहता हूँ वह कमाल बदाह साहिब अल-जज़ायर का है। 2 फ़रवरी को सत्तावन साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सदर जमाअत अब्दुलह-लीम साहिब लिखते हैं कि मरहूम एक सच्चे मोमिन और मुख़लिस अहमदी थे। उन्होंने अपना घर जमाअत के इज्लासात और नमाज़ों और तब्लीग़ी सरगर्मीयों के लिए हमेशा खुला रखा। समस्त अहमदी उनकी क़ुव्वत-ए-ईमानी, मेहमान--नवाज़ी और फ़राख़-दिल्ली की गवाही देते हैं। मरहूम ने पीछे रहने वालों में पत्नी के इलावा तीन बच्चे यादगार छोड़े हैं जिनमें दो बेटे ग़ैर अहमदी हैं और एक बेटी अहमदी है। उनकी पत्नी श्रीमती करीमा साहिबा सदर लजना के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा चुकी हैं।

अल-जज़ायर से हस्सान ज़मूली साहिब कहते हैं कि कमाल बदाह साहिब बहुत मुख़लिस और बड़ी ख़िदमत करने वाले अहमदी थे। हमसाइयों की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ मुश्किलात के बावजूद आख़िरी दम तक अपना घर नमाज़ के लिए खुला रखा। नमाज़-ए-जुमा के लिए आने वाले मेहमानों के लिए खाना बसा--औक़ात ख़ुद ही पकाते थे। ख़िदमत-ए-ख़लक़ के मुख़्तलिफ़ कामों और ख़ून के अतियात देने के कामों में शरीक होते थे। मरहूम के घर पर मुख़्तलिफ़ इजला सात भी होते और नमाज़-ए-ईद भी। हुकूमत के पास जानेवाले जमाती वफ़द में भी मरहूम थे।

मरहूम कहा करते थे कि क्योंकि जो सख़्तियां आजकल जमाअत अल--जज़ायर में हो रही हैं इस की वजह से हम जमाअत की तारीख़ लिख रहे हैं और अब मरहूम ख़ुद भी इस तारीख़ का हिस्सा बन गए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए

अगला जनाज़ा है डाक्टर शमीम मलिक साहिबा का वर्णन है जो श्रीमान मक़सूद अहमद मलिक साहिब शहीद लाहौर की पत्नी हैं जो 2010 ई. में दारुल ज़िकर में शहीद हुए थे। अपने ख़ावंद की शहादत के कुछ अर्से बाद यह कैनेडा चली गई थीं और वहां उनकी वफ़ात हुई है। मरहूमा ने पी. एच.डी तक तालीम हासिल की। कॉलेज में पढ़ाती थीं। प्रोफ़ैसर हुईं। हैड आफ़ डिपार्टमैंट के ओहदे तक तरक़्क़ी पाई लेकिन इस के साथ घर, काम और बच्चों की ज़िम्मेदारियाँ सारों को बड़े अहसन तरीक़ से निभाया। बग़ैर तफ़रीक़ हर वर्ग के लोगों की फ़राख़-दिल्ली से मेहमान-नवाज़ी करतीं। ज़रूरतमंदों का ख़्याल रखने वाली एक साहिबे अलराए ख़ातून थीं। ग़ैरअज़ जमाअत अहबाब और ग़ैर अहमदी रिश्तेदारों को हमेशा दावत इल्लाह करतीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुतुब ज़ेरे मुताला रखती थीं। ज़िंदगी में ही पंजाब यूनीवर्सिटी में उन पर एक thesis भी लिखा गया। thesis बाद में लिखे जाते हैं लेकिन उन पर उनकी ज़िंदगी में लिखा गया। तालीम का उनको बेहद शौक़ था। बहुत से लोगों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाया। सौम-ओ-सलात और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम की पाबंद थीं। तहज्जुद बाक़ायदा अदा करने वाली थीं। शायर-ए-इस्लाम की पाबंदी करने वाली बापरदा ख़ातून थीं। मुख़लिस थीं। बावफ़ा थीं। ख़िलाफ़त से ख़ास अक़ीदत का ताल्लुक़ था। मरहूमा मूसिया भी थीं। पीछे रहने वालों में एक बेटा और चार बेटियां शामिल हैं। मलिक ताहिर अहमद साहिब अमीर जमाअत लाहौर की ये बहन थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनकी औलाद को भी, नसल को भी ख़िलाफ़त और जमाअत से हमेशा जोड़े रखे।

अगला वर्णन है अज़ीज़म फ़र्हाद अहमद जो इरशाद अहमद अम्मीनी साहिब जर्मनी के बेटे थे। यह छब्बीस साल की उम्र में गुज़शता दिनों वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अज़ीज़म फ़्रैंकफ़र्ट यूनीवर्सिटी में ज़ेर-ए-ताअलीम थे। वक़्फ़-ए-नौ की बाबरकत तहरीक में शामिल थे। वफ़ात से क़बल मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया में लोकल और रीजनल सतह पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। मरहूम इंतेहाई नेक, ख़ुश-मिज़ाज, फ़रमांबर्दार और मिलन-सार नौजवान थे। जमाती और तंज़ीमी कामों के लिए हमेशा तैयार रहते थे। वफ़ात से एक दिन क़बल एक जमाअती प्रोग्राम में सारा दिन और फिर रात को भी देर तक ख़िदमत बजा लाते रहे। अगले दिन फिर सुबह मस्जिद में नमाज़--ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद ख़ुद्दामुल अहमदिया की एक मीटिंग में शामिल हुए और मीटिंग के इख़तेताम पर अपने घर जाने लगे और अपनी कार के क़रीब पहुंचे तो वहां उनकी तबीयत ख़राब होनी शुरू हुई। मुरब्बी साहिब ने उनको अपने मिशन हाऊस की खिड़की से देखा। वे उनकी मदद के लिए आए। इस अर्से में ये अपनी गाड़ी में बैठ तो गए थे लेकिन तबीयत लगता था बहुत ज़्यादा ख़राब हुई। डाक्टरों ने यही बताया कि इस वक़्त शदीद हार्ट-अटैक हुआ है। तीन चार मिनट के अंदर एम्बूलैंस भी आ गई थी। उन्होंने तिब्बी इमदाद भी शुरू कर दी थी। तक़रीबन पैंतालीस मिनट उन्होंने कोशिश भी की लेकिन ख़ुदा तआला की तक़दीर ग़ालिब आई और अपने ख़ालिक़ हक़ीक़ी से मिले।

अज़ीज़म फ़र्हाद अपने माँ बाप की इकलौती औलाद थे। अल्लाह तआला उनके वालदैन को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

अगला वर्णन है चौधरी जावेद अहमद बिस्मिल साहिब का जो आजकल कैनेडा में थे। पिछले दिनों 72 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। काफ़ी लंबा अरसा बीमार रहे। तहरीक जदीद की ज़मीनों पर बड़ा लंबा अरसा उनको मैनेजर के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। चौबीस पच्चीस साल। फिर ख़ुद्दामुल अहमदिया और दूसरी जमाती ख़िदमात की भी उनको तौफ़ीक़ मिलती रही। अमीर ज़िला उमरकोट के तौर पर भी उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। पत्नी और चार बेटे और दो बेटियां उनके पीछे रहने वालों में शामिल हैं।

उनके बेटे ताहिर अहमद साहिब कहते हैं कि मेरे वालिद बहुत सी ख़ूबियों के मालिक थे। ख़ादिम-ए-दीन थे। लोगों मि सहायता करते थे। ख़िलाफ़त से गहरी मुहब्बत थी और हमेशा यही कोशिश होती थी कि ख़िलाफ़त के साथ उन का एक ख़ास ताल्लुक़ क़ायम रहे। गरीबों का बड़ा ख़्याल रखने वाले थे। ज़मींदार थे। ज़मीनें भी थीं उनकी सिंध में। तो जब भी यहां से जाते अपने ग़रीब साथियों के लिए तोहफ़े और कपड़े वग़ैरा लेकर जाते थे कि उनकी शादीयों पर काम आएँगे। कहते हैं मेहमान-नवाज़ी बहुत ज़्यादा थी। रोज़ाना हमारे घर मेहमान आए रहते थे और बड़ी सादगी से उनकी तवाज़ो करते थे। अल्लाह तआला ने उनको बहादुर भी बहुत बनाया था। जब भी मुख़ालेफ़ीन के साथ सामना हुआ तो हमेशा जमाती ग़ैरत को सामने रखा। बहुत से अदालती मुआमलात में बड़ी बहादुरी से जमात की पैरवी की। इस वजह से मुख़ालेफ़ीन ने दो मर्तबा आप पर हमला भी किया था लेकिन अल्लाह तआला ने उस वक़्त वहां से बचा लिया। बहुत अनथक मेहनत की और हमेशा जमाअत के पैसे की बहुत क़दर करते थे। अल्लाह तआला पर बहुत तवक्कुल करते थे। सादा तबीयत के मालिक थे और सबसे बड़ी ख़ूबी उनकी यह थी कि आख़िरी बीमारी जो बड़ा लंबा अरसा चली है, इस को उन्होंने बड़े सब्र से बर्दाश्त किया और अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी रहे। वफ़ात से एक दिन क़बल कहते हैं उनके मुआलिज ने कहा कि मैंने ऐसा साबिर इन्सान अपनी ज़िंदगी में नहीं देखा। कभी कोई शिकायत नहीं की। जब उनको बताया गया कि डाक्टर ने लाइलाज कह दिया है तो उस वक़्त कुछ थोड़े बहुत होश-ओ-हवास में थे। बोलते नहीं थे, सुनते थे तो निहायत इतमीनान से इस बात को सुना और क़बूल किया। बेटा कहता है कि तहज्जुद पढ़ने और तस्बीह का बड़ा शौक़ था और हमेशा ख़लीफ़-ए-वक़्त के लिए सबसे पहले दुआ किया करते थे। हमें भी दुआओं की तलक़ीन करते थे। मुआमला फहम थे। फ़िरासत थी। बे-इंतेहा शुक्र करने वाले थे। तंगी और सख़्ती को भी मुस्कुराहट के साथ बर्दाश्त करते थे। बड़े साफ़-दिल के मालिक थे। फिर बेटे ने लिखा है कि हमारे बेहतरीन उस्ताद भी थे। शफ़ीक़ बाप भी थे और समस्त ख़्वाहिशों को पूरा करने वाले, बेहतरीन मश्वरा देने वाले थे। बड़ी मज़बूत शख़्सियत के मालिक थे। अल्लाह के फ़ज़ल से उनकी औलाद भी जमाअत से अच्छी तरह है और मेरा भी इन से पुराना ताल्लुक़ था जो खूबियां उनके बेटे ने वर्णन की हैं, और लोगों ने भी लिखी हैं जिन्हों ने उनके बारे में लिखा लेकिन मैंने भी देखा है कि यह वाक़्य में इन ख़ूबियों के मालिक थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

की अमन की तालीम को दुनिया में फैला सकते हैं? काश कि ये लोग अक़्ल करें। उनके उल्मा उलमाए सू बनने के बजाय अक़्ल-ओ-दानिश फैलाने वाले उल्मा बने ताकि उम्मते वाहिदा बन कर हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को दुनिया में फैलाने वाले बन सकें और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के साथ मिलकर दुनिया को हक़ीक़ी अमन-ओ-सलामती का पैग़ाम पहुंचा सकें।

बहरहाल यह एक अलग और विस्तार वाला विषय है।

इस वक़्त मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उत्तरी हुई शरीयत,आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अमन-ओ-सलामती फैलाने वाली तालीम के हवाले से अमन-ए--आलम के बारे में कुछ बातें करूँगा

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का उस्वा तो इस क़दर वुसअत रखे हुए हैं कि इस का अहाता थोड़े वक़्त में मुम्किन ही नहीं लेकिन बहरहाल जैसा कि मैंने कहा चंद बातें वर्णन करूँगा।

जमात अहमदिया के बारे में कहा जाता है कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हतक और तौहीन के मुर्तक़िब होते हैं और उसकी तालीम देते हैं लेकिन हक़ीक़त में हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम पर अमल करने वाले और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करने वाले हैं। जमाअत का लिटरेचर इस बात का गवाह है। हर साल हज़ारों सईद फ़ितरत लोग इस तालीम और मुहब्बत को देखकर जमाअत अहमदिया मुस्लिमा में शामिल होते हैं। ग़ैर भी यह कहने पर मजबूर हैं कि इस्लाम की यह तालीम तो ऐसी प्रभावी और मुहब्बत और सलामती फैलाने वाली तालीम है कि यही दुनिया के अमन का आज वाहिद हल है।

अभी कुछ दिन पहले मैं ने यू.के के जलसा सालाना में जमाअत की तरक़्क़ी की रिपोर्ट में और जलसा के तास्सुरात के वाक़ियात में लोगों के वर्णन सुनाए कि किस तरह वे लोग अहमदी माहौल और जलसा के माहौल से प्रभावित हुए और उन्हें इस्लाम की अम्न पसंद तालीम का पता चला। बहरहाल हमारे मुख़ालेफ़ीन जो भी चाहें सोचें और करें, हमारा काम है कि अगर हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्ची मुहब्बत है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम को अपनाएं और दुनिया में फैलाएं। दुनिया को बताएं कि आज दुनिया की अमन-ओ-सलामती का यही वाहिद हल है। अतः आओ और अमन-ओ--सलामती की तालीम देने वाले इस अज़ीम वजूद से जुड़ कर दुनिया-ओ--आख़िरत में अपनी सलामती के सामान कर लो। यह सिर्फ़ बातें ही नहीं हैं बल्कि जब हम तारीख़ पर नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि किस तरह इस नबी ने अनपढ़ और जाहिल अरबों को जहालत के अंधेरों से निकाल कर आला अख़लाक़ और इलम-ओ-अमल के मीनारों तक पहुंचा दिया। हज़रत-ए--अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"वही रसूल जिसने वहशियों को इन्सान बनाया और इन्सान से बाअख़लाक़ इन्सान। यानी सच्चे और वाक़ई अख़लाक़ के मर्कज़ एतिदाल पर क़ायम किया और फिर बाअख़लाक़ इन्सान से बाख़ुदा होने के इलाही रंग से रंगीन किया।"

(मजमूआ इश्तेहारात, भाग 2पृष्ठ 183 الاشتهار مستيقنًا بوحی الله القهار,प्रकाशन नज़ारत नशर वा इशाअत कादियान 2019 ई.)

अतः आप अलैहिस्सलाम ने अपने मानने वालों और अपने से मुहब्बत करने वालों को अख़लाक़ और इबादतों के वे गुण सिखाए जिन्हों ने उन्हें ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने वाला बना दिया और उनका हर क़ौल-ओ-फ़ेअल ख़ुदा तआला की रज़ा के लिए हो गया। हुक़ूक़ उल-ईबाद की अदायगी भी की तो ख़ुदा तआला का क़ुरब पाने के लिए। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी इन्सान को इस मुक़ाम पर ले जाती है जहां वह अल्लाह तआला से हक़ीक़ी मुहब्बत करने वाला बन जाता है और यह हक़ीक़ी मुहब्बत फिर इन्सान के हर क़ौल-ओ-फ़ेअल को ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने वाला बना देती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस-सलाम आँहज़रत सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करने वाले के बारे में फ़रमाते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करना और आपसे मुहब्बत रखना अंजाम-कार इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है।"(हकीकतुल वह्यी,रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 67)

अतः यह इन्क़लाब था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लोगों के दिलों में पैदा किया कि जो मुशरिक थे वे एकेश्वरवादी बने और ऐसे एकेश्व-रवादी बने कि ख़ुदा तआला के प्यारे बन गए। वे ख़ुदा तआला से मुहब्बत करने वाले और ख़ुदा तआला उनसे प्यार करने वाला बन गया। अल्लाह तआला से मुहब्बत करने वालों ने इबादत के भी हक़ अदा किए और ख़ूब अदा किए। अल्लाह तआला की दी हुई तालीम पर अमल शुरू किया और ख़ूब किया और इस के मयार क़ायम किए।

जब किसी से मुहब्बत होती है तो फिर उसके हर क़ौल-ओ-फ़ेअल पर इन्सान अमल करने की कोशिश करता है, उसकी हर बात सुनने और इस को मानने की कोशिश करता है।

ज़बानी मुहब्बत का दावा नहीं करता। अतः जब उन लोगों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत पैदा हुई तो ख़ुदा तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने की तरफ़ भी तवज्जा पैदा हुई। हुक़ूकुल-ईबाद की बजा आवरी में भी एक दूसरे से सबक़त ले जाने की कोशिश करने वाले बनने लगे। और जब यह सूरत-ए-हाल पैदा हो तो फिर आपस का मुहब्बत-ओ-प्यार भी लिल्लाह पैदा होता है। दूसरों के हक़ भी ख़ुदा तआला की रज़ा हासिल करने के लिए इन्सान अदा करता है और जब ये मयार बन जाएं तो फिर अमन-ओ-सलामती की भी बुनियाद पड़ती है, इस के लिए कोशिश होती है और उसके मयार क़ायम होते हैं।

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह वजूद हैं जिन्हों ने हमें ख़ुदा तआला से मिलने के रास्ते दिखाए और यही वजूद है जिस पर उत्तरी हुई तालीम पर अमल कर के हम दुनिया में अमन-ओ-सलामती पैदा कर सकते हैं।

हमेशा याद रखना चाहिए कि अमन की बुनियाद घरों से शुरू होती है। फिर मुहल्ले, क़स्बे, शहर, मुल्क और विश्व की सतह तक उस का दायरा बढ़ जाता है। अतः हर सतह पर जब एक दूसरे के जज़बात और हुक़ूक़ का ख़्याल रखा जाता है तो अमन क़ायम होता है और हर तबक़ा की यही तालीम अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया हमें दी। हर वर्ग को ये तालीम दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस विषय पर मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर वर्णन करते थे लेकिन एक अवसर पर इस मज़मून को वर्णन फ़रमाया

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अमन-ए-आलम"

आप रज़ियल्लाहु अन्हो के इस मज़मून से फ़ायदा उठाते हुए, लाभ प्राप्त करते हुए मैं भी इस हवाले से कुछ वर्णन करूँगा।

यह तो हम देखते हैं और समझते हैं कि अमन बड़ी अहम चीज़ है। अमन की बातें होती हैं, हर कोई कहता है अमन बहुत अहम चीज़ है और अमन की हालत ही घर के सुकून और सलामती की भी ज़मानत है और बैनुल अक़वामी सतह पर भी सुकून-ओ-सलामती की ज़मानत है और ख़ाहिश भी रखते हैं कि हर सतह पुर अम्न क़ायम हो लेकिन केवल ख़ाहिश अमन पैदा नहीं कर देती क्योंकि यहां भी अमन की ख़ाहिश ख़ुदग़रज़ी लिए हुए होती है और यही हम दुनिया में देखते हैं।

अगर ख़ुदग़रज़ी न हो तो लड़ाईयां हो ही नहीं सकतीं। सधारणतः जब कोई अमन की बात करता है तो अमन की ख़ाहिश अपने लिए होती है बल्कि उमूमन जब इन्सान दुआ भी करता है और अगर दुआ नहीं भी हो रही तो इन्सान यही कहता है यानी बाज़ दफ़ा ख़ाहिश का इज़हार ज़बान पर भी आ जाता है कि अल्लाह तआला मुझे और मेरे बीवी बच्चों को मेरे क़रीबियों को अमन में रखे। दूसरों के अमन में रहने के लिए यह दर्द नहीं होता या इन्सान अपनी ज़िंदगी सुकून से बसर करने के लिए दौलत चाहता है और उसको अच्छा समझता है तो उसका मतलब यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी वह दौलत को अच्छा समझता है बल्कि सिर्फ अपने लिए दौलत को अच्छा समझता है। अगर सेहत को अच्छा समझता है तो इस का मतलब यह नहीं कि दुश्मन के लिए भी अच्छी सेहत चाहता है। दुश्मन के लिए तो यही चाहेगा कि वह नादार हो और कमज़ोर हो ताकि उसको दुश्मन पर फ़ौक़ियत रहे। इसी तरह इज़्ज़त-ओ-मर्तबा अगर लोग चाहते हैं तो अपने लिए, हर शख़्स के लिए नहीं चाहते। ये कभी नहीं चाहेंगे कि दूसरे को भी वही इज़्ज़त-ओ-मर्तबा मिले जो मुझे मिल रहा है। दुनिया में यही नज़्ज़ारे हमें नज़र आते हैं आम लोगों में भी और लीडरों में भी। सियासतदानों की आपस की लड़ाईयां और इक़्तेदार में आने पर एक दूसरे पर ज़ुलम जो

अपने ही मुल्कों में हम देख रहे हैं, एक दूसरे पर जो कर रहे हैं वह इसी सोच का नतीजा है। अतः अगर सिर्फ अमन की ख़ाहिश है तो वह फ़साद का ज़रीया हो सकती है क्योंकि इस में ख़ुदग़रज़ी शामिल है क्योंकि जो लोग अमन चाहते हैं वह इस रंग में अमन के मुतमन्नी हैं कि सिर्फ उन्हें और उनके क़रीबियों को या उनकी क़ौम को अमन हासिल रहे। वर्ना दूसरों के लिए और दुश्मनों के लिए वह यही चाहते हैं कि उनके अमन को मिटा दें। अतः अगर इस उसूल को रायज कर दिया जाए कि अपने लिए और मयार और दूसरे के लिए और तो दुनिया में जो भी अमन क़ायम होगा वह चंद लोगों का अमन होगा, सारी दुनिया का अमन नहीं होगा। और अगर सारी दुनिया का अमन न हो तवज्जो सारी दुनिया की अमन की न हो वह हक़ीक़ी अमन नहीं कहला सकता। हक़ीक़ी अमन तभी होगा जो ज़ाती, ख़ानदानी, नसली, क़ौमी, मुल्की तर्जीहात से बाला हो कर क़ायम करने की कोशिश की जाए, एक मर्कज़ी महवर के हुसूल के लिए किए जाए। और यह उसी सूरत में हो सकता है जब इन्सान इस बात को समझ ले और इस का फ़हम-ओ-इदराक पैदा करले कि मेरे ऊपर एक बाला हस्ती है जो मेरे लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त दुनिया के लिए अमन चाहती है, जो मेरे घर और देश के लिए ही अमन नहीं चाहती बल्कि समस्त मुल्कों के लिए अमन चाहती है। अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीम अमन का नुक़्ता महवर यह एहसास है कि एक बाला हस्ती मुझे देख रही है जिस के लिए मैंने अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल को एक करना है। हमेशा इस उसूल पर चलने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बताए हुए इस सुनहरी उसूल को सामने रखना होगा कि दूसरे के लिए भी वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद हो।

अतः इस उसूल को सामने रखते हुए हमेशा यह सोच रखनी होगी कि अगर मैं सिर्फ अपने लिए या अपनी क़ौम के लिए या सिर्फ अपने देश के लिए अमन का मुतमन्नी हूँ तो इस सूरत में मुझे अल्लाह तआला की मदद, उस की नुसरत और उस की ख़ुशनुदी कभी हासिल नहीं हो सकती।

जब इस अक़ीदे पर इन्सान क़ायम हो जाए कि अल्लाह तआला की ख़ातिर सब कुछ करना है तभी हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है वर्ना नहीं।

अतः अल्लाह तआला ने आँहज़रतसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया हमें اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ (अल्हशर : 24) वह बादशाह है। पाक है, दूसरों को पाक करता है। ख़ुद हर एक ऐब से सलामत है, दूसरों को सलामत रखता है। सबको अमन देने वाला है। यह कह कर कि اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ इन्सानी इरादों को पाक साफ़ कर दिया है और ये निश्चित बात है कि जब तक इरादे दरुस्त न हो उस वक़्त तक काम भी दरुस्त नहीं हो सकता। नीयत ही साफ़ न हो तो काम में बरकत किस तरह पड़ सकती है? जब तक इरादे दरुस्त न हूँ उस वक़्त तक बहरहाल यह याद रखना चाहिए कि कभी भी काम दरुस्त नहीं हो सकता, हो ही नहीं सकता

दुनिया में इस वक़्त जितनी लड़ाईयां और फ़साद हैं वह सब इस वजह से हैं कि इन्सान के इरादे साफ़ नहीं हैं।

लोग मुँह से जो बातें करते हैं उनके मुताबिक़ उनकी ख़ाहिशात नहीं और उनकी ख़ाहिशात के मुताबिक़ उनके क़ौल-ओ-फ़ेअल नहीं और दुनिया के इस फ़साद में बड़ी और प्रगति प्राप्त कहलाने वाली क़ौमों का ज़्यादा किरदार है। आज बेशक दुनिया लड़ाई को बुरा कहती है। हर लीडर का यही वर्णन कर रहा है कि लड़ाई बुरी चीज़ है लेकिन इस का मतलब सिर्फ यह है कि हमारे ख़िलाफ़ कोई लड़े तो यह बुरी बात है लेकिन अगर उनकी तरफ़ से जंग की इबतेदा हो तो यह कोई बुरी बात नहीं है और यह नुक़्स इस वजह से है कि इन लोगों की नज़र उस हस्ती पर नहीं है जो 'सलाम है और सलामती देने वाली हस्ती है। वह समझते हैं कि जहां तक हमारा फ़ायदा है हम अमन के नारे लगाने पर अमल करेंगे परंतु जब हमारे मुफ़ाद के ख़िलाफ़ बात आएगी तो हम रद्द कर देंगे। हमारे दुश्मन की कोई मदद करे और उसे असलाह दे तो यह किसी सूरत में काबिल--ए-क़बूल नहीं है लेकिन अगर हम किसी को असलाह दें चाहे वह ज़ुलम करने पर ही प्रयोग हो रहा हो तो यह जायज़ है। अगर यह सोच हो तो किस तरह हक़ीक़ी अमन क़ायम हो सकता है।

अतः हक़ीक़ी अमन दुनिया में लाने के लिए यही अक़ीदा और इस पर अमल कारगर होगा कि दुनिया का एक ख़ुदा है जो यह चाहता है कि सब लोग अमन में रहें।

और जब यह अक़ीदा होगा, इस पर अमल होगा तो फिर ही इन्सान की ख़ाहिशात ख़ुदग़रज़ी से बाला होंगी बल्कि दुनिया को आम नफ़ा पहुंचाने वाली होंगी और जब यह होगा तो हमारी सोच में और अमन-ओ-सलामती क़ायम करने के और ही मयार होंगे। हम यह नहीं देखेंगे कि फ़ुलां बात का हमें फ़ायदा पहुंचता है या नहीं बल्कि हम ये देखेंगे कि सारी दुनिया पर उसका क्या असर है। दुनिया वाले तो हमेशा अपने फ़ायदे के लिए दूसरों के अमन को बर्बाद करते रहते हैं लेकिन जो यह अक़ीदा रखते हैं कि एक बाला हस्ती है तो वो कभी जुर्रत नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें पता है कि अगर हमने ऐसा किया तो एक बाला हस्ती हमें कुचल कर रख देगी। उद्देश्य कि हक़ीक़ी अमन उस वक़्त तक क़ायम नहीं हो सकता जब तक एक बाला हस्ती को तस्लीम न किया जाए,जब तक उस की मुहब्बत दिल में पैदा न हो। और यह अक़ीदा कि अल्लाह तआला अमन देने वाला है सिर्फ इस्लाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया पेश किया है।

अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो तालीम उतारी इस में फ़रमाया कि قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ۙ يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ (अलमायद : 16-17) यक़ीनन तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आ चुका है और एक रोशन किताब भी। अल्लाह उसके ज़रीया उन्हें जो उसकी रज़ा की पैरवी करें सलामती की राहों की तरफ़ हिदायत देता है। अतः अल्लाह तआला ने तो नूर-ए-हिदायत भेज दिया, एक किताब भी समस्त अहकामात के साथ भेज दी और इस में सलामती की राहों की तरफ़ वाज़ेह हिदायात भी वर्णन फ़र्मा दें। अब जो लोग उस की कामिल पैरवी करेंगे वही सलामती की राहों को पाने वाले होंगे। अगर आज मुस्लमानों में फ़ित्ना-ओ-फ़साद की कैफ़ीयत है, आपस में जंगों की कैफ़ीयत है तो वाज़िह है कि यह अल्लाह तआला की दी हुई और भेजी हुई किताब और नूर की हक़ीक़ी पैरवी नहीं कर रहे। बेशक दावे हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत करते हैं लेकिन अमल उसके ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला का क़ौल तो कभी ग़लत नहीं हो सकता। अल्लाह तआला की बात कभी ग़लत नहीं हो सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बातें कभी ग़लत नहीं सकतीं।

अगर मुस्लमानों में फ़ित्ना-ओ-फ़साद है तो वाज़िह है कि यह इस किताब को मानने का दावा तो करते हैं परंतु अल्लाह तआला ने इस में जो तालीम उतारी है इस की पैरवी नहीं कर रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत का दावा तो है लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उस्वा और तालीम पर नहीं।

अतः आज आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम सादिक़ के मानने वालों का यह काम है कि इस तालीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाएँ। क़ुरआन-ए-करीम के अहकामात पर अमल करें तो तभी अपने माहौल में सलामती पैदा कर सकते हैं और दुनिया को भी सलामती का पैग़ाम पहुंचा सकते हैं अन्यथा दुनिया कहेगी कि अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल एक करो फिर हमें नसीहत करना।

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अब आसमान के नीचे फ़क़त एक ही नबी और एक ही किताब है अर्थात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो आला वा अफ़ज़ल सब नबियों से और उत्तम वा अकमल सब रसूलों से और ख़ातमुल अंबिया और ख़ैरुल नास हैं जिनकी पैरवी से ख़ुदाए तआला मिलता है और ज़ुलमाती पर्दे उठते हैं और इसी जहान में सच्ची नजात के आसार नुमायां होते हैं और क़ुरआन शरीफ़ जो सच्ची और कामिल हिदायतों और तासीरों पर मुश्तमिल है जिसके ज़रीया से हक़्क़ानी उलूम और मआरिफ़ हासिल होते हैं और बशरी आलूदगियों से दिल पाक होता है और इन्सान जहल और ग़फ़लत और शुबहात के हिजाबों से निजात पाकर हक़्कुल्-यक़ीन के मुक़ाम तक पहुंच जाता है।" (बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 557-558 हाशिया दर हाशिया)

अतः अल्लाह तआला ने अपने नूर, जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और क़ुरआन-ए-करीम जो रोशन किताब और तमाम उलूम-ओ-मआरिफ़ का स्रोत और हिदायत का नूर है और सलामती का पैग़ाम है, को भेज कर इन्सानियत पर बहुत बड़ा एहसान किया है। अगर इन्सान इस से फ़ायदा ना उठाए और अपने तबाह करने वाली ख़ुदग़रज़ी मुफ़ादात का ही कैदी रहे तो इस से बड़ी बदक़िस्मती और

क्या हो सकती है।

अतः अगर अपनी दुनिया-ओ-आक़िबत संवारनी है, अमन-ओ-सलामती से रहना है तो हमें अल्लाह तआला के इस कलाम को जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरा हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि يَهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ السَّلٰمِ यह रोशन किताब की हिदायत को हमेशा अपने सामने रखें। इस रोशन किताब की हिदायत को पढ़ना और सामने रखना चाहिए तभी इस्लाम के मार्ग पर चलने वाले होंगे। सलामती के रास्ते पर चलने वाले होंगे। इस किताब का कोई हुक्म भी ऐसा नहीं जो इन्सानी अमन बर्बाद करने वाला है। अतः यह पैग़ाम है जो अपनों और ग़ैरों को देना हमारा काम है आज और यही दुनिया के अमन की ज़मानत है।

और यही वह इन्क़लाब था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में पैदा किया और अमली तौर पर ऐसी जमाअत तैयार कर दी जो اِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا (अल् फ़ुरकान : 64) और जब जाहिल उनसे मुख़ातब होते तो कहते सलाम, उसका मिस्दाक़ बना दिया और यही वह हालत है जब हम में पैदा हो जाए और हम दुनिया में पैदा कर दें तो हमारा हाल और हाज़िर भी अमन में होगा और हमारा मुस्तक़बिल भी अमन में होगा। अतः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों का यह एक बहुत बड़ा काम है जिन्हों ने अपने घरों और अपने माहौल में भी अमन और सलामती पैदा करनी है और दुनिया में भी अमन-ओ-सलामती पैदा करनी है।

और यह काम उसी वक़्त होगा जब हमारे दिल भी ख़ालिस तौहीद से पुर होंगे और दुनिया को भी हक़ीक़ी तौहीद की तरफ़ लाने वाले होंगे

यह बात निश्चित है कि तौहीद कामिल के क़ियाम के बग़ैर अमन क़ायम हो ही नहीं सकता।

पहले भी वर्णन हो गया कि बाला हस्ती को बहरहाल तस्लीम करना होगा और वह बाला हस्ती अल्लाह तआला की ज़ात है और इस का ख़्याल तौहीद को दिल में क़ायम किए बग़ैर नहीं आसकता और तौहीद क़ायम नहीं होगी तो लड़ाईयां भी जारी रहेंगी। लड़ाईयां तो तभी बंद हो सकती हैं जब हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा हो, आपस में मुहब्बत और प्यार पैदा हो, भाई चारे की सूरत-ए-हाल पैदा हो।

अमन उस वक़्त तक क़ायम हो ही नहीं सकता जब तक लोगों के अंदर हक़ीक़ी मुवाख़ात पैदा न हो और हक़ीक़ी मुवाख़ात एक ख़ुदा को माने बग़ैर पैदा नहीं हो सकती,वाहिद-ओ-यगाना ख़ुदा से ताल्लुक़ के बग़ैर पैदा ही नहीं हो सकती। सिर्फ मानना ही नहीं बल्कि एक ताल्लुक़ भी क़ायम करना होगा और उसकी तालीम भी हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़रीया ही मिली है। इसलिए अल्लाह तआला ने اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (अल्फातिहा : 2) की तालीम जब हमें क़ुरआन-ए-करीम में दी तो उसे हर नमाज़ में पढ़ने का हुक्म भी दियाता कि मुस्लमानों में उख़ुवत का वसीअ तसव्वुर क़ायम हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ कर ख़ुदा तआला की रबूबियत तमाम आलम पर वसीअ होने का इदराक पैदा होता है। इन कलिमात को पढ़ कर इन्सान की सोच वसीअ होती है और वह इस ख़ुदा की तारीफ़ करता है जो तमाम दुनिया और जहानों का रब है। जो ईसाइयों का भी रब है, हिंदूओं का भी रब है, यहूदियों का भी रब है और हर एक का रब है। जब ये कलिमात इन्सान पढ़ता है तो फिर किसी से नफ़रत क्योंकर हो सकती है। यही बात मैंने एक दफ़ा अमरीका में ग़ैरों की एक मजलिस में वर्णन की तो वे कहते हैं ये कैसी है! और वाक़ई इस्लाम की तालीम ऐसी है जो कभी एक हक़ीक़ी मुस्लमान के दिल में दूसरे के लिए बुग़ज़-ओ-कीना पैदा कर ही नहीं सकती। رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ के शब्दों ने तो सब का अहाता कर लिया है और यही चीज़ सलामती फैलाने के बड़े और वसीअ रास्ते खौलती है। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ में बता दिया गया कि अगर हक़ीक़ी तौहीद क़ायम हो और रब्बुल अलमीन की हमद से इन्सान की ज़बान तर हो तो ये मुम्किन ही नहीं कि किसी क़ौम का कीना इन्सान के दिल में हो, न ईसाइयों के लिए, न हिंदूओं के लिए, न यहूदियों के लिए।

यह किस तरह हो सकता है कि एक तरफ़ तो वह उनकी बर्बादी की ख़ाहिश रखे और दूसरी तरफ़ उनको देखकर अल्लाह तआला की हमद और तारीफ़ भी करे। यह हो ही नहीं सकता। अतः हक़ीक़ी एकेश्वरवादी ही हक़ीक़ी अमन-ओ-सलामती का अलमबरदार है। अगर मुस्लमान हक़ीक़त में इस नुक्ता को समझ लें और इस के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगियों को ढालें तो दुनिया में हक़ीक़ी अम्न पसंद यही होंगे लेकिन फिर वही बात कि इस के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम-ए-सादिक़ के साथ जुड़ना भी ज़रूरी है, तभी इलम-ओ-मार्फ़त का सही इदराक भी हो सकता है।

लेकिन साथ ही में फिर कहूँगा कि यह हम पर भी ज़िम्मेदारी डालता है कि हम अपनी हालतों का जायज़ा लेते रहीं। यह न हो कि हमारा नमाज़ों में اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ पढ़ना सिर्फ़ मुँह के अलफ़ाज़ हों और दिल उस की गहराई से ख़ाली हो। अगर दिल-ओ-दिमाग़ उस गहराई से ख़ाली हैं तो हम भी फ़िला-ओ-फ़साद पैदा करने वालों में से होंगे। अमन-ओ-सलामती फैलाने वालों और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई तालीम की पैरवी करने वालों में से नहीं होंगे।

अतः बहुत सोचने का मुक़ाम है, बहुत ग़ौर की ज़रूरत है, बहुत फ़िक्र का मुक़ाम है। आज हर अहमदी का काम है कि हक़ीक़ी अमन और सलामती दुनिया में पैदा करने के लिए ख़ुदा-ए वाहिद पर अपने ईमान को पुख़्ता करे। ख़ुदा तआला की मुहब्बत को अपने दिलों में रासिख़ करे कि कोई और मुहब्बत उसकी जगह न ले सके। इसके हुक्मों पर अमल करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हुई तालीम यानी क़ुरआन-ए-करीम को अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बनाए। जब हमारे मयार इस हद तक जाऐंगे कि क़ुरआन-ए-क्रीम का हर हुक्म और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर इरशाद हमारे क़ौल-ओ-फ़ेअल का हिस्सा बन जाएगा तब ही हम दुनिया को इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंचा सकेंगे। उन्हें हक़ीक़ी अमन के गुरु की न सिर्फ तालीम पेश कर के बताएँगे बल्कि अपने अमल से भी सिखाएँगे और यही दुनिया में हक़ीक़ी अमन क़ायम करने का ज़रीया है और यही आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अमन-ए-आलम का अज़ीम वजूद साबित करने का ज़रीया है। यही इस्लाम पर एतराज़ करने वालों के मुँह-बंद करने का ज़रीया है। बहरहाल आज यह काम मसीह मौऊद की जमाअत के सपुर्द किया गया है। अगर हमने भी घरेलू सतह से लेकर विश्व की सतह तक उस के मुताबिक़ अपना किरदार अदा न किया तो हमारे अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत नहीं है, न ही हमारी नसलों की अमन-ओ-सलामती में रहने की कोई ज़मानत है और न ही दुनिया के अमन-ओ-सलामती की कोई ज़मानत है। अल्लाह तआला हमें दुनिया को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ ले जाने का ज़रीया बनाए। अल्लाह तआला अहसन रंग में हमें फ़र्ज़ अदा करने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

हम अब दुआ करेंगे। दुआ में सब यह भी दुआ करें कि अल्लाह तआला सब जलसे में शामिल वालों को जलसा की बरकात का हामिल बनाए और हर एक को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं का वारिस बनाए। दुनिया के हालात में जल्द हर तरह से अमन-ओ-सलामती पैदा फ़रमाए ताकि हम अपने जलसे फिर बड़े पैमाने पर और इसी शान से हर किस्म की फ़िकरों से आज़ाद हो कर आयोजित कर सकें और जलसों को अपनी रुहानी और इलमी प्यास बुझाने का ज़रीया बनाएँ और हक़ीक़त में अपनी ज़िंदगियों को इस्लामी तालीम के मुताबिक़ ढालने वाले बन जाएं। अल्लाह तआला के प्यार और इस के फ़ज़ल को समेटने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ दे। (दुआ करलें दुआ)

दुआ के बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया जर्मनी जलसा की जो हाज़िरी है वह पहले सुन लें फिर नारा लगाऐं। कहते हैं जलसा की हमारी कुल हाज़िरी अनीस हज़ार सात सौ बयासी है जिसमें महिलाएं नौ हज़ार चार-सौ बयासी और मर्द हज़रात दस हज़ार तीन सौ और इस के इलावा जो दूसरे ज़राए से लोग जलसा सालाना की कार्रवाई देख रहे हैं या सुन रहे हैं उनकी तादाद भी चालीस हज़ार से ऊपर है। अच्छा अब अगला प्रोग्राम जो आपने करना है करें।

(धन्यवादसहित अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 27 सितंबर 2022 ई.)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 20 April 2023 Issue No. 16

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र) Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198
e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com
(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

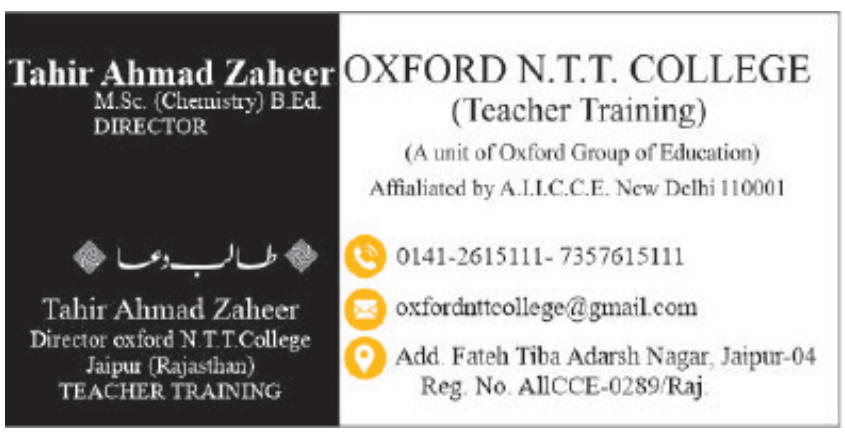

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad